चन्दामामा
अगस्त १९७८

काटिए और रखिए

बोर्नविटा आविष्कारों की अजब कहानी-२

बिजली के बल्ब का कमाल

आविष्कारक : टामस अल्वा एडिसन १८४७–१९३१ यू.एस.ए.

सिद्धान्त : बिजली की शक्ति रोशनी और गर्मी की शक्ति में बदली जा सकती है.

साल : १८७९

बिजली का बल्ब काम कैसे करता है?

बिजली के बल्ब में मुख्यरूप से दो धातु की छड़ें (राड्स) होती हैं, जो टंगस्टेन तार से जुड़ी होती हैं. ये टंगस्टेन तार बारीक होते हैं और ज़बर्दस्त तरीके से कॉयल किए गए होते हैं. ये सब शीशे के बल्ब में रखा होता है. ये शीशे का बल्ब नाइट्रोजन और आर्गोन गैसों के मिश्रण से भरा होता है.

जब आप रोशनी जलाते हैं तब एक बिजली की लहर इस बारीक टंगस्टेन कॉयल से होकर गुजरती है. चूंकि ये टंगस्टेन कॉयल बहुत पतला होता है, ये इस लहर के बहाव के लिए बड़ी ज़बर्दस्त रुकावट पैदा करता है, जिससे एक बिजली की रगड़ जैसी पैदा हो जाती है. ये रगड़ निगेटिव तरीके से चार्ज हुए बहुत सारे कणों (इलेक्ट्रान्स) को कॉयल से बाहर निकाल फेंकती है. इससे कॉयल पाज़िटिव तरीके से चार्ज हो जाता है और इन इलेक्ट्रान्स को फिर से वापस खींचने लगता है, जिससे हमें रोशनी और गर्मी की शक्ति मिलती है.

चूंकि टंगस्टेन केवल एक बहुत ऊंचे तापमान (३३८०° सेंटिग्रेड) पर ही पिघलता है, इससे कॉयल पिघलने नहीं पाता. ये जलता भी नहीं, क्योंकि शीशे के बल्ब में आक्सीजन नहीं होता.

काटिए और रखिए

कैडबरिज़ बोर्नविटा

आपको ज़्यादा शक्ति देता है...आपको आगे रखता है.

OBM/8990 HIN

विशेष भेंट-२

एक नामी वितरक के विशेष सहयोग से हमने ५० पृष्ठों की रंगीन, सचित्र, यू. के. में छपी आकर्षक पुस्तक 'The How And Why Wonder Book of Communications' (अंग्रेजी में) रु. ६.५० (डाक खर्च मुफ्त: असली दाम ५० पेन्स)के किफायती दर पर आपको विशेष भेंट की तरह दिलाने का इंतज़ाम किया है. अपनी पुस्तक पाने के लिए मनीआर्डर से रु. ६.५० और डाक से किसी बोर्नविटा पैक का फॉयल या ऊपरी फ्लैप इस पते पर भेजिए: Dept. 2A, India Book House, 22, Bhulabhai Desai Road, Bombay 400 026. जल्दी कीजिए! पुस्तकें कम हैं.

ओह, ये कील मुहासे!

साफ़ी प्रयोग कीजिये. कील मुहासों और त्वचा के अन्य रोगों से छुटकारा पाइये. साफ़ी रक्त को साफ़ करती है और त्वचा को निखारती है.

साफ़ी में सम्मिलित २४ जड़ी-बूटियां और अन्य आवश्यक द्रव्य प्रभावकारी हैं और आप की त्वचा को साफ़ और सुन्दर बनाते हैं.

इन का इलाज— साफ़ी

रक्त को साफ़ करती है, त्वचा को निखारती है.

हमदर्द

चुन्नु का ड्राईंग में प्रथम आने का रहस्य ?

कॉलिंक के रंग

आप भी कॉलिंक के रंग इस्तेमाल करें और चुन्नु की तरह प्रथम आयें।

कॉलिंक इन्डस्ट्रीज 69-नजफ़गढ़ रोड, नई दिल्ली-110015

ज़िन्दगी की सुहानी चीज़ों की तरह
हमेशा ताज़ा, हमेशा सजीव !
Pond's
Dreamflower talc
पॉण्ड्स
ड्रीमफ़्लावर
टाल्क
जिसकी सुगंध आपको हमेशा से पसन्द है
Pond's
CF-1829

सिंहल भाषा में
चन्दामामा के
प्रकाशन के संदर्भ में

भारत के प्रधान मंत्री के
द्वारा प्राप्त
शुभ संदेश

"चन्दामामा" प्रकाशन ने भारत के बच्चों को स्वस्थ साहित्य, उत्तम संप्रदाय एवं सरस मनोरंजन प्रदान किया है, फलतः उनके प्रकाशनों ने स्वयं भारत के बच्चों के हृदयों में अपना अमिट स्थान बना लिया है। मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि अब चन्दामामा के प्रकाशनों का श्रीलंका में भी विस्तार हो रहा है।

मैं आप के इस नये प्रयास का अभिनंदन करता हूँ और साथ ही यह विश्वास करता हूँ कि भारत के बच्चों के बीच जैसे आप के प्रकाशन लोकप्रिय रहे हैं, वैसे ही सिंहल के बच्चों के बीच भी लोकप्रिय होंगे।

नई दिल्ली
जून ३१, १९७८

मोरारजी देसाय

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने से नया रंगीन सचित्र धारावाही "भल्लूक मांत्रिक" शुरू होने जा रहा है। हमारा विश्वास है कि यह नया धारावाही उपन्यास पाठकों का आदर प्राप्त करेगा।

इस महीने की बेताल कथा "व्यर्थ परीक्षा" है। विद्यार्थियों के लिए जैसे परीक्षाएँ होती हैं, वैसे साधारण प्रजा के लिए उनके जीवन में परीक्षाएँ होती हैं। उन परीक्षाओं में जो सफल होता है, वही ठहर सकता है। चाहे वे परीक्षाएँ अन्य मानव लें या जीवन में स्वयं ही उत्पन्न हो जायें, उनके मर्म को जाननेवाला ही जीवन में सफल हो सकता है।

वर्ष : २० अगस्त १९७८ अंक : १२

एक प्रति : १-२५ :: वार्षिक चन्दा : १५-००

अमर वाणी

यो हि दत्त्वा द्विपश्रेष्ठं
कक्ष्यायां कुरुते मनः
रज्जु स्नेहेन किं तस्य
त्यजतः कुंजरोत्तमं ? ॥ १ ॥

[उत्तम नस्ल के हाथी को दान करते हुए उसके पगहे को लेकर दुखी होने का मतलब ही क्या रहा ?]

सुपात्र दानाच्च भवेद्धनाढ्यो,
धन प्रभावेण करोति पुण्यं
पुण्य प्रभावा त्सुरलोकवासी,
पुनर्द्धनाढ्यः पुनरेव भोगी ॥ २ ॥

[पात्रोचित दान करके धनी बनता है । धन होने के कारण ही पुण्य कार्य करता है । पुण्य के कारण स्वर्ग पाता है और पुनः धनी बनकर सुख भोगते हैं ।]

कुपात्र दानाच्च भवेद्दरिद्रो,
दारिद्र्य दोषेण करोति पापं
पाप प्रभावा न्नरकं प्रयाति;
पुनर्द्दरिद्रः, पुनरेव पापी ॥ ३ ॥

[अपात्र दान करके दरिद्र बनता है, दरिद्र होकर पाप करता है । पाप करके नरक भोगता है, पुनः पापी और दरिद्र बनता है]

दान

[६१]

विष्णुशर्मा ने बताया–"हाथ में आई हुई वस्तु मूर्खता के कारण खो जाती है। मगरमच्छ को प्राप्त वस्तु को बन्दर ने उसके हाथ से खो दिया।"

"हमें वह कहानी सुनाइये!" राजकुमारों ने पूछा। इस पर विष्णुशर्मा ने यों बताया :

समुद्र के किनारे समुद्र की एक गहरी नहर के तट पर एक बहुत बड़ा जामुन का पेड़ था। वह पेड़ जामुन के फलों से लदा हुआ था। रक्तमुख नामक एक बन्दर उस पेड़ पर निवास किया करता था। पेड़ के नीचे जल में करालमुख नामक एक मगरमच्छ का निवास था।

एक दिन मगरमच्छ किनारे तक तैरकर आया, जामुन के पेड़ के नीचे धूप में बालू पर लेट गया।

इस पर बन्दर ने कहा–"तुम मेरे अतिथि हो! इसलिए मैं तुम्हें अमृत तुल्य जामुन देता हूँ, तुम खा लो! मनु ने बताया है कि वैश्वदेव-यज्ञ की समाप्ति पर आनेवाले अतिथि को भोजन कराने पर चाहे वह हमारे मित्र हो या शत्रु, विद्वान हो या मूर्ख, हमें स्वर्ग की प्राप्ति होगी! साथ ही वैश्वदेव यज्ञ की समाप्ति के बाद आये हुए व्यक्ति का वंश, वर्ण, विद्या और परिवार का परिचय जानने का प्रयत्न किये बिना उसका अतिथि सत्कार करके भर पेट उसे भोजन कराना चाहिए, जिस से उत्तम लोकों की प्राप्ति होती है! मगर अतिथियों को भगाने पर देवता तथा पितृ देवता भी हमारे प्रति विमुख हो जाते हैं।" यों समझाकर बन्दर ने मगरमच्छ को जामुन दिये।

बन्दर और मगरमच्छ की कहानी

मगरमच्छ ने जामुन खाकर देर तक बन्दर के साथ वार्तालाप किया; तब वह अपने निवास को लौट गया। इसके बाद प्रति दिन बन्दर और मगरमच्छ जामुन के पेड़ की छाया में शास्त्र-चर्चा करते थे।

एक दिन मगरमच्छ के जामुन खाने के बाद भी कई फल बच रहें। मगरमच्छ ने वे फल ले जाकर अपनी पत्नी को दिये।

जामुन खाकर प्रसन्न हो मगरमच्छ की पत्नी ने पूछा–"प्रियतम! अमृत जैसे मीठे ये फल तुम्हें कैसे प्राप्त हुए?"

मगरमच्छ ने जवाब दिया–"प्रिये! रक्तमुख नामक एक बन्दर मेरा परम मित्र है! वह प्रति दिन बड़े स्नेह से मुझे ये फल दिया करता है।"

"ऐसे अमृत जैसे फल खानेवाले उस बन्दर का कलेजा न मालूम कैसा स्वादिष्ट होगा? अगर मेरे प्रति तुम्हारा सचमुच ही प्रेम है तो तुम उस बन्दर का कलेजा लेते आओ। उसे खाकर मैं जरा-मरण से मुक्त हो नित्य यौवना रहकर तुम्हारे साथ सुख भोग सकती हूँ।" पत्नी ने कहा।

"प्रेयसी, ऐसी बातें मत करो। वह बंदर मेरे छोटे भाई जैसा है! अलावा इसके उसका वध करना मेरेलिए संभव नहीं है। इसलिए तुम अपनी यह इच्छा त्याग दो। बुजुर्गों का कहना है कि सत्संग द्वारा प्राप्त होनेवाली मैत्री सर्वोत्तम है। उस मैत्री के सामने सहोदरों का स्थान भी बाद को आता है! कहा जाता है कि एक
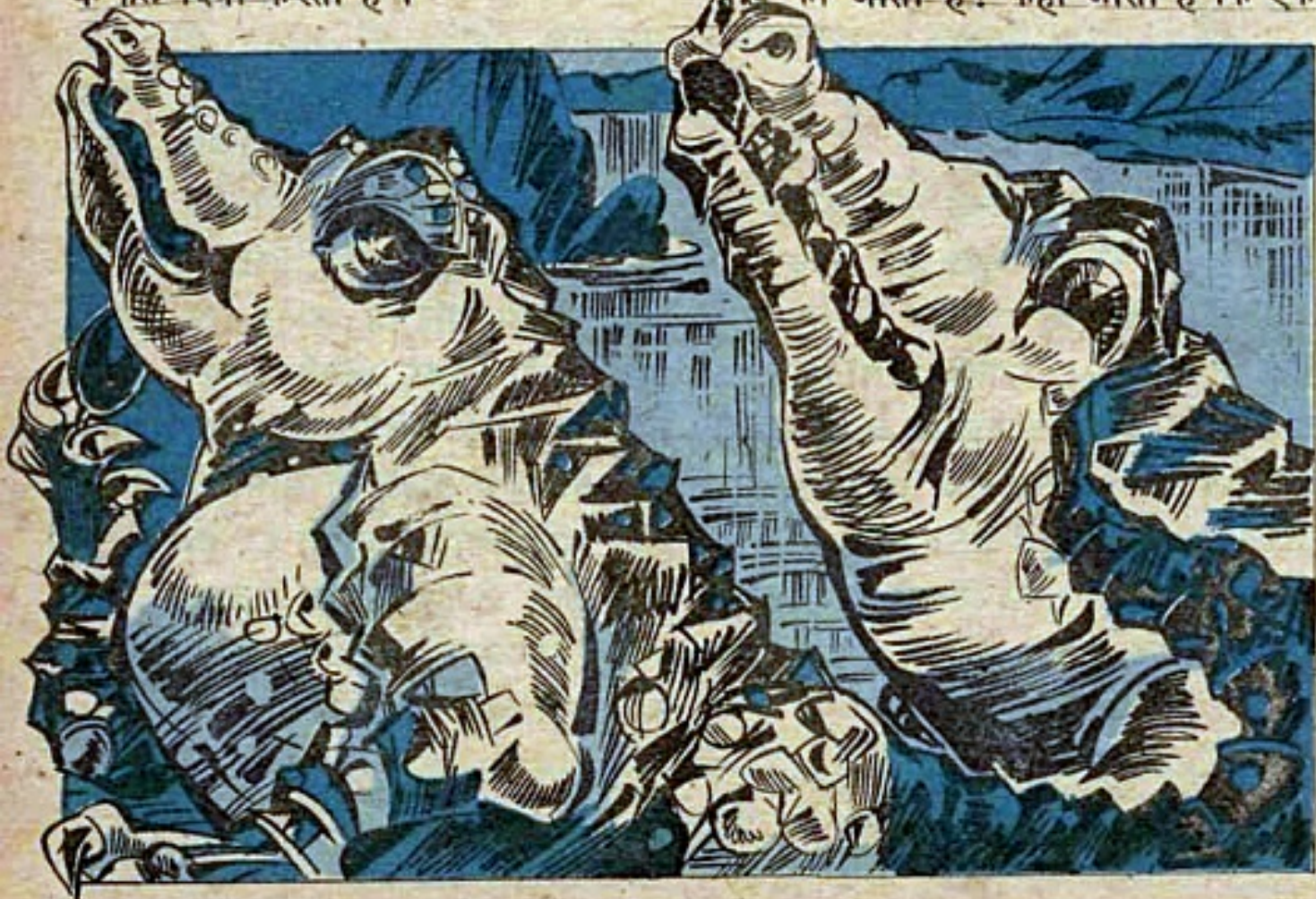
ही रक्त को बांटकर पैदा होनेवाले सहोदरों से भी मित्रों का स्थान कहीं उत्तम है ।" मगरमच्छ ने समझाया ।

"तुमने आज तक कभी मेरी इच्छा का तिरस्कार नहीं किया है! इसलिए ये फल देनेवाला बंदर ज़रूर मादा बंदर होगी । तुम उससे प्यार करते होगे! यही कारण है कि तुम सारा दिन उसके संग बिता देते हो! तुम मेरे प्रति उदासीन रहते हो! मेरे साथ प्रेम भरी बातें नहीं करते हो! इससे मालूम होता है कि तुम्हारा मन किसी और नारी पर लगा हुआ है ।" मगरमच्छ की पत्नी ने ताने दिये ।

इस पर मगरमच्छ अपनी पत्नी के पैरों पर गिरकर उसके क्रोध को शांत करने के ख़्याल से दीन स्वर में बोला– "हे सुंदरी! मैं हृदय पूर्वक तुम्हारे साथ प्रेम करता हूँ! तुम्हारे क्रोध को शांत करने के लिए मेरे सिवा और कौन है? मैं तुम्हारे चरण पकड़कर बिनती करता हूँ कि मुझ पर नाराज़ मत होओ ।"

ये बातें सुन मगरमच्छ की पत्नी रो पड़ी, रुद्ध कंठ से बोली–"उस नारी ने तुम्हारे दिल को लूट लिया है । उसके साथ हँस हँसकर बात करनेवाले तुम्हारे दिल में मेरेलिए कोई स्थान नहीं है । अगर वह तुम्हारी रखेली नहीं है तो तुम मेरी बात मानकर उसे मार क्यों नहीं डालते? हे दुष्ट! ये झूठे साष्टांग प्रणाम क्यों करते हो? इसी से मालूम होता है न कि तुम उस मादा बंदर के साथ प्यार करते हो? इतनी बातें ही क्यों? अगर तुमने मेरे लिए उस बंदर का कलेजा लाकर नहीं दिया तो मैं अन्न-जल त्यागकर अपने प्राण दे दूँगी ।"

अपनी पत्नी का निर्णय सुनकर मगरमच्छ मन ही मन सोचने लगा–"वज्र नामक गोंद, मूर्ख औरत, केकड़ा, मछली, शराबी, नील–ये सब छुड़ाये नहीं छूटते! विद्वानों का कहना ये बातें सचमुच सत्य हैं । अब मेरा कर्तव्य क्या है? बन्दर को मैं कैसे मारूँ?"

१९९. प्रथम कृषक

संसार में सर्व प्रथम मानव ने टिग्रिस-यूफ्राटीस नदियों के बीच स्थित "मेसोपोटामिया" में सभ्यता का निर्माण किया था। वही सुमेरियन सभ्यता कहलाती है। ८, ९ हज़ार वर्षों के पूर्व आज के ईराक प्रदेश से संबंधित खानाबदोशों ने कृषि कार्य प्रारंभ करके, नगरों का निर्माण किया और सुमेरियन सभ्यता की नींव डाली। चित्र में हस्सुना नगर के खण्डहर अंकित हैं। इनके निर्माता गृह निर्माण तथा पेशेवर कारीगरियाँ भी जानते थे। यहाँ पर चकमक पत्थर की हँसिये तथा छुरियाँ भी उपलब्ध हुई हैं।
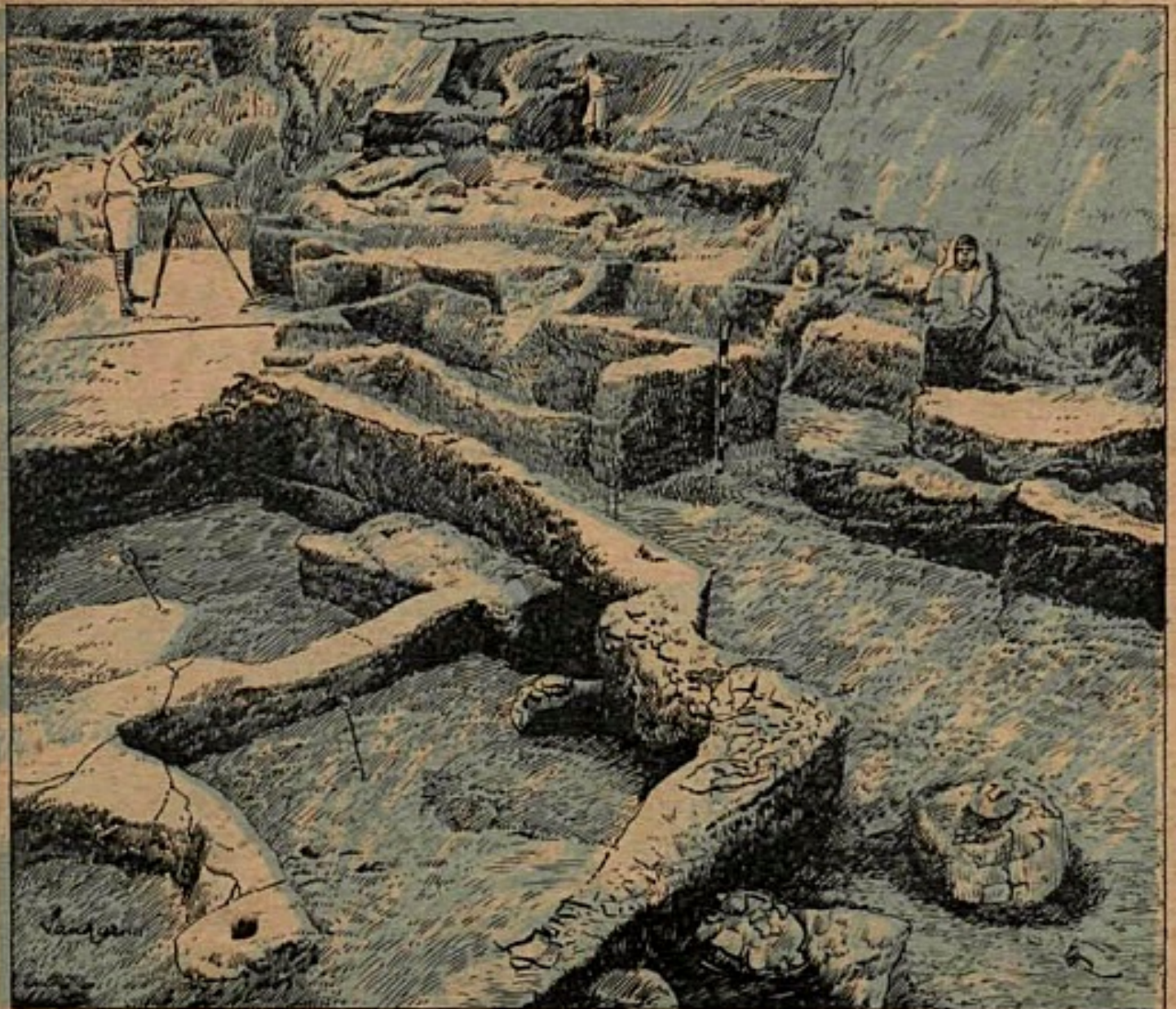
भल्लूक मांत्रिक

प्राचीन काल में ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर एक भयंकर जंगल था। उस जंगल में बसे एक गाँव में कालीवर्मा नामक एक क्षत्रिय युवक रहा करता था। उसका पिता महान योद्धा था जो चन्द्रशिला नगर के राजदरबार में एक सैनिक अधिकारी था। एक बार युद्ध में वह अपने अनुपम पराक्रम का परिचय देते हुए काम आया। उस वक़्त कालीवर्मा केवल दस साल का बालक था। उसकी माँ अपने पति की मृत्यु की चिता में घुल-घुलकर शीघ्र ही मर गई। ऐसी हालत में बलभद्र नामक एक विश्वासपात्र नौकर ने कालीवर्मा को पाल-पोसकर बड़ा किया और उसे एक क्षत्रिय के लिए उचित सारी विद्याएँ सिखाईं।

कालीवर्मा जब बीस साल का युवक हुआ, तब बलभद्र ने एक दिन उसे समझाया—"कालीवर्मा, अब तुम इस छोटे-से गाँव को छोड़ राजधानी नगर में जाओ। वहाँ पर राजदरबार में कोई नौकरी पाने की कोशिश करो।"

काली वर्मा के मन में भी इधर कुछ दिनों से यही विचार काम कर रहा था। लेकिन अपने प्रदेश के राजा जितकेतु के प्रति उसके मन में थोड़ा भी आदर का भाव न था। राजा देहातियों से कर वसूल करने में समर्थ ज़रूर थे, मगर लुटेरों से उनकी रक्षा करने में असमर्थ थे।

यही बात कालीवर्मा बलभद्र को सुनाकर बोला—"चन्द्रशिला नगर के राजा जितकेतु

असमर्थ और कायर हैं। ऐसे राजा के दरबार में सैनिक बनकर पेट भरने से बढ़कर अपमान की बात मेरे लिए क्या हो सकती है? इसलिए मेरा अपना यही विचार है कि कहीं और जाकर आजीविका का कोई उपाय करूँ।"

वृद्ध बलभद्र ने थोड़ी देर सोचकर कहा–"राजाओं के शासन की दक्षता अधिकतर उनके दरबारी अधिकारियों पर निर्भर होती है। जितकेतु के पिता महान पराक्रमी थे। तुम्हारे पिता जैसे प्रतापी और बुद्धिशाली उनके दरबार में थे। उनकी मृत्यु के बाद जितकेतु गद्दी के वारिस बने। मेरा संदेह है कि राजा तो स्वार्थी और झूठी तारीफ़ करनेवाले लोगों से घिरे हुए हैं।"

"हो सकता है! मगर ऐसे राजा का क्या मैं अकेले ही उद्धार कैसे कर सकता हूँ? तब तो मैं इसी गाँव का खेत जोतकर अपना पेट पालना ज्यादा उचित समझता हूँ।" कालीवर्मा ने कहा।

"यह काम तुम जैसे क्षत्रिय युवक के करने लायक़ नहीं है। अलावा इसके जानते हो, तुम्हारे पिता ने अपनी मृत्यु के समय मुझसे क्या कहा था?" इन शब्दों के साथ बलभद्र कालीवर्मा को एक कमरे के पास ले गया जिसे आज तक खोला नहीं गया था, उसे खोलकर कालीवर्मा को कमरे के भीतर ले गया।

उस कमरे में कालीवर्मा के पिता के द्वारा इस्तेमाल किये गये तरह-तरह के आयुध, कवच तथा उन अस्त्र-शस्त्रों के पास सोने की मूठवाली तलवार भी पड़ी थी। बलभद्र ने कालीवर्मा की कमर में तलवार बांध दी, तब उसे कवच पहनाकर बोला–"ओह, ये सब हथियार ऐसे प्रतीत हो रहे हैं, मानो तुम्हारे लिए तैयार कराये गये हो! तुम्हारे पिता का आदेश था कि तुम एक क्षत्रिय योद्धा के रूप में अपने जन्म को सार्थक बनाओ! फिर तुम्हारी जैसी इच्छा!"

अपने पिता द्वारा छोड़े गये कवच व खड्ग के धारण करते ही कालीवर्मा का उत्साह उमड़ पड़ा। उसने तत्काल म्यान में से तलवार खींचकर उसकी धार की जांच की। उसकी चमक पर आश्चर्य करते हुए बोला–"बलभद्र! मैं निश्चय ही अपने पिता के आदेश का पालन करूँगा। मेरे भविष्य का निर्माण करनेवाली चीज हल का फाल नहीं, तेज धारवाली यह तलवार है!"

ये बातें सुन बलभद्र बड़ा खुश हुआ और दूसरे दिन ही कालीवर्मा की चन्द्रशिला नगर की यात्रा के लिए आवश्यक सारी तैयारियाँ कीं। कालीवर्मा ने कवच धारण किया, तलवार कमर में बांध ली, मार्ग-व्यय के लिए एक सौ स्वर्ण मुद्राएँ ले घोड़े पर सवार हो चल पड़ा। चलते वक़्त उसने बलभद्र को वचन दिया कि वह राजदरबार में नौकरी पाने के बाद छे महीनों में एक बार उससे मिलने अवश्य लौट आएगा।

जंगल के रास्ते दुपहर तक कालीवर्मा की यात्रा बेरोकटोक चली। दुपहर के वक़्त उसने सोचा कि अपने साथ लाई गई रोटियां खाकर किसी पेड़ की छाया में विश्राम करे। तब पानी की खोज में वह किसी पहाड़ी नाले की ओर चल पड़ा, अपने घोड़े को एक संकरीली रास्ते से आगे बढ़ाया, वह थोड़ी ही दूर चला था कि उसे एक पेड़ पर से किसी के कराहने की आवाज़ सुनाई दी।

कालीवर्मा ने अचरज में आकर सर उठाकर पेड़ की शाखाओं में देखा। शाखाओं में से एक मानव आकृति चीखकर धम्म से जमीन पर गिर पड़ी। कालीवर्मा झट से घोड़े से उतर पड़ा और उस व्यक्ति के निकट पहुँचा। वह एक वृद्ध था। ऊपर से गिरने पर भी वह घायल नहीं हुआ था। बूढ़ा अपनी कमर पकड़कर उठ खड़े होने की कोशिश करके ज़ोर से कराह उठा और फिर से जमीन पर लुढ़क पड़ा।

कालीवर्मा उसके समीप जाकर बोला– "दादाजी, इस अवस्था में तुम पेड़ पर क्यों चढ़ गये? जीभ की लालच में पड़कर मधुमक्खी के छत्ते को तोड़ने तो पेड़ पर चढ़ नहीं गये थे?"

बूढ़े ने पल भर कालीवर्मा की ओर परखकर देखा, तब बोला–"बेटा, तुम तो कोई राजभट जैसे लगते हो! मेरा अनुमान सही है न? वैसे तुम लोग फ़सल की कटाई के समय कर वसूली को छोड़ फिर कभी इस प्रदेश में दिखाई नहीं देते हो न?"

"मैं राजभट नहीं हूँ। यही नौकरी पाने के लिए राजधानी नगर में जा रहा हूँ। लेकिन तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। शहद का छत्ता कहाँ? तुमने हाथ-पैर तो नहीं तुड़वाये? क़िस्मतवर लगते हो!" कालीवर्मा एक साँस में सारी बातें बोल गया।

बूढ़ा चुपचाप उठ खड़ा हुआ, चार-पाँच क़दम चलकर संतुष्टि के साथ सर हिलाकर बोला–"तुम्हारे कहे अनुसार मैं क़िस्मतवर हूँ। ऐसा न होता तो इस बार लुटेरों ने जब गाँव पर हमला किया, तब घर पर ही रहकर उनके हाथों में नाना प्रकार की यातनाएँ झेल लेता।"

बूढ़े की बातें सुनने पर कालीवर्मा को उसकी हालत थोड़ी बहुत समझ में आ गई। इसका मतलब था कि बूढ़ा लुटेरों से बचकर भाग आया, पेड़ पर छिपकर फिसल जाने की वजह से नीचे गिर गया है।

"दादाजी! मैंने भी सुना है कि इस प्रदेश में लुटेरों का दबदबा कहीं ज्यादा है। लेकिन मैंने यह बात नहीं सुनी थी कि दिन दहाड़े ही वे लोग गाँवों पर हमला करके लूट ले जायेंगे। तुम्हारे गाँव के और लोग कहाँ गये हैं?" कालीवर्मा ने पूछा।

"बेटा, लुटेरों के हमारे गाँव में प्रवेश करते देख सब लोग जहाँ-तहाँ भाग गये

हैं। लुटेरों के गाँव छोड़कर जाने के बाद ही एक-एक करके सब लोग घर लौट आयेंगे। यह तो हमारे लिए साधारण बात है।" बूढ़े ने समझाया।

राजा का समाचार जानते हुए भी बूढ़े के मन की बात ताड़ने के ख्याल से कालीवर्मा ने पूछा-"दादा, क्या तुम लोगों ने लुटेरों की बात राजा को क्यों सूचित नहीं किया? वे सिपाही भेजकर उनका संहार करवा देते?"

दादा उदासपूर्ण चेहरा बनाकर बोला-"हमारे द्वारा सूचना देने के पहले ही राजा के सिपाही प्रवेश करके हमारी आधी फ़सल उठा ले जाते हैं। बाक़ी आधी फसल इन चारों तरफ़ के पहाड़ों में बसनेवाले लुटेरे लूट ले जाते हैं। राजा से यह बात छिपी नहीं है।"

उसी वक़्त पेड़ों की ओट में से चार लुटेरे सामने आये और मजाक़ भरे स्वर में बोले-"वाह, बूढ़े ने ख़ूब कहा! आगे होनेवाली फ़सल में से राजा का हिस्सा भी हम्हीं लोग लेनेवाले हैं।" इन शब्दों साथ तलवार उठाकर कालीवर्मा से बोले-"तुम्हारे कवच, तलवार और घोड़े को देखने पर ऐसा लगता है कि तुम अपने साथ थोड़ा धन भी ले आये हो। धन की वह थैली जमीन पर रखकर चार क़दम पीछे हट जाओ।"

कालीवर्मा ने चोरों की ओर एक बार तीव्र दृष्टि डाली, तब घोड़े के पास जाकर

जीन से लटकनेवाली रोटियों की छोटी-सी थैली ले आया, उसे जमीन पर रखकर चार क़दम पीछे हट गया। चोरों में से एक बड़ी आतुरता के साथ झुककर थैली उठाने को हुआ, उसी वक़्त कालीवर्मा ने म्यान से तलवार खींचकर चोर की गर्दन उड़ा दी, दूसरे ही क्षण बिजली की गति से आगे कूदकर दो और चोरों की छातियों में तलवार भोंक दी।

चौथा चोर जान के डर से ज़ोर से चिल्लाया और भागने को हुआ। इस पर कालीवर्मा तेजी के साथ उसके पीछे दौड़ पड़ा। उसके केश पकड़कर उसकी कमर पर जोर से लात मारी। ज्यों ही वह गिरा, त्यों ही उसे बूढ़े के पास खींच लाया।

अचानक अपनी आँखों के सामने तीन चोरों का मर जाना तथा चौथे का हाथ-पैर मारते छटपटाना देख बूढ़ा कांप उठा और बोला—"बेटा, यह तुम्हारा कैसा साहस है? मेरे गाँव में तुम से भी ज़्यादा बलवान कितने ही नौजवान हैं! वे क्या कभी साहस करके इन चोरों का सामना करके वध कर पाये?"

"यह काम उन युवकों के द्वारा कराकर ही मैं राजधानी में जाऊँगा। भूख की बात फिर सोची जाएगी। तुम रोटियों की यह थैली लेकर अपने गाँव का रास्ता बतला दो। मैं अपने घोड़े के साथ इस लुटेरे को भी तुम्हारे पीछे ले आता हूँ।" कालीवर्मा ने कहा।

बूढ़ा और कालीवर्मा वहाँ से निकलने को ही थे तभी थोड़े से ग्रामवासी हांफते हुए वहाँ पहुँचे और पूछा—"दादाजी, क्या हुआ? चीखनेवाले वे लोग कौन थे?"

कालीवर्मा ने उनकी ओर घृणा भरी दृष्टि दौड़ाकर कहा—"ऐसा तो मुझे मालूम नहीं होता कि तुम में से कोई अंधा है। गाँवों पर हमला करके लूटनेवाले डाकुओं का सम्मिलत रूप से सामना करना छोड़ तुम लोग कायरों की भांति

जंगलों में भाग जाते हो? तुम भी कैसे आदमी हो?"

ये बातें सुन सबने लज्जा के मारे अपने सिर नीचा किये। इस पर बूढ़े ने उन्हें सारा वृत्तांत सुनाकर समझाया–"अबे, सुनो! आस-पास के गाँवों के बूढ़ों को छोड़ बाक़ी लोग इस युवक को अपना नेता बनाकर पहाड़ों में छिपे लुटेरों का सर्वनाश करो। हम लोग दिन के वक़्त भी घर-द्वार छोड़कर आखिर कितने दिन इस प्रकार जंगलों में अपने सर छिपाते फिरेंगे? क्या हम आदमी हैं? या हिरण अथवा खरगोश जैसे क्षुद्र जानवर हैं?"

ये बातें सुन कालीवर्मा ने संतुष्टि के साथ सर हिलाकर कहा–"मैं तुम लोगों से जो कुछ कहना चाहता था, उसे इस वृद्ध ने बताया है। हमारे हाथ लगे इस चोर के द्वारा बाक़ी लुटेरों का निवास जानने में कोई कठिनाई नहीं है। तुम लोगों में जो भाला व लाठी चलाना जानते हैं, वे सब मेरे पीछे चलो। एक हफ़्ते के अंदर सभी लुटेरों का सर्वनाश करके मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा।"

इसके बाद ग्रामवासी सादर कालीवर्मा को अपने गाँव ले गये और उसे बढ़िया दावत दी। उस दिन शाम को कुछ युवक दूर के गाँवों में जाकर कई युवकों को अपने साथ ले आये। कालीवर्मा ने उन्हें समझाया कि कैसे लुटेरों का हिम्मत के साथ सामना करना है।

हाथ लगे लुटेरे ने जान के डर के मारे कालीवर्मा को अन्य लुटेरों का समाचार बताया कि उनमें से कितने लोग किस पहाड़ की गुफा या घाटी में छिपे हैं और वहाँ तक पहुँचने के गुप्त मार्ग क्या हैं?

कालीवर्मा ने गाँव के युवकों को साथ ले लुटेरों पर हठात् हमला किया और अनेक लुटेरों को मार डाला। जो लुटेरे बच गये, वे राज्य की सीमा को पार कर पहाड़ों के उस पार के जंगलों में भाग गये।

लुटेरों को भगाकर कालीवर्मा इतमीनान से राजधानी नगर की ओर चल पड़ा। पंद्रह दिन की यात्रा के बाद वह जंगल को पार कर चन्द्रशिला नगर की सरहद पर पहुँचने ही जा रहा था कि एक दिन सूर्योदय के समय अचानक दस अश्वारोहियों ने आकर उसे घेर लिया। कालीवर्मा को म्यान से तलवार खींचने का मौक़ा तक नहीं मिला।

अश्वदल के सरदार ने कालीवर्मा की ओर तीव्र दृष्टि प्रसारित करते हुए पूछा– "तुम्हीं कालीवर्मा हो न? लुटेरों को राज्य की सीमा से पड़ोसी राज्य में भगाने की धृष्टता करनेवाले भी तुम्हीं हो न?"

"हाँ, हाँ, मैंने ही यह काम किया है। ऐसे साहस का कार्य करनेवाले मुझे आदरपूर्वक राजधानी में न ले जाकर राजा के दर्शन कराने के बदले मुझे आप लोग इस तरह घेर रहे हैं, जैसे किसी लुटेरे को घेरा जाता है। यह कैसी बात है?" अचरज में आकर कालीवर्मा ने घुड़सवारों से पूछा।

यह उत्तर सुनकर अश्वदल का नेता ठठाकर हँस पड़ा और बोला–"तुमने राजा जितकेतु के प्रति बड़ा ही अपराध किया है। यहाँ से भागनेवाले लुटेरों ने पड़ोसी राज्य में लूट-खसोट शुरू किया है। वहाँ के राजा यह सोचकर कि हमने ही उन लुटेरों को उनके राज्य में भगा दिया है, नाराज़ होकर चन्द्रशिला नगर पर हमला करने जा रहे हैं। इस गड़बड़ी का कारण तुम्हीं हो। इसलिए हम तुम्हें फांसी पर लटकाकर तुम्हारी लाश को उस राजा की सेवा में भेजने जा रहे हैं।"

"क्या तुम्हारे राजा जितकेतु के साथ तुम्हारे भी दिमाग ख़राब हो गये हैं?" ये शब्द कहते कालीवर्मा तलवार की मूठ पर हाथ डालने को हुआ, तभी अश्वारोही कालीवर्मा को बन्दी बनाकर घोड़े पर डाल राजधानी की ओर चल पड़े।

(और है)

व्यर्थ परीक्षा

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, मैं नहीं जानता कि शायद कोई आप की परीक्षा ले रहे हो! मगर कुछ लोग व्यर्थ परीक्षाएँ लेकर आप को अनावश्यक कष्ट पहुँचा देंगे। इन परीक्षाओं के द्वारा किसी का कोई प्रयोजन सिद्ध न होगा। इसके उदाहरण के रूप में मैं आप को कांचनवर्मा की पुत्री रत्नप्रभा की कहानी सुनाता हूँ, श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल यों सुनाने लगा: प्राचीन काल में सिंहपुरी राज्य पर राजा कांचनवर्मा शासन करते थे। उनके रत्नप्रभा नामक एक पुत्री थी। रत्नप्रभा जब युक्त वयस्का हुई, तब राजा कांचनवर्मा उसका विवाह

बेताल कथाएँ

करना चाहते थे, मगर उन्हीं दिनों में अचानक कांचनवर्मा का देहांत हो गया। इस पर रत्नप्रभा गद्दी पर बैठी। उसने अल्प समय में ही शासन कार्यों में अपने पिता से बढ़कर अपार यश प्राप्त किया। वह प्रकट रूप में कहा करती थी कि जनता के कष्टों का पता लगाकर उन्हें तत्काल दूर करना ही शासन का सब से बड़ा रहस्य है।

सिंहपुरी के पड़ोसी देश विजयपुरी के राजा रविवर्मा ने रत्नप्रभा के साथ विवाह करना चाहा। उनका विचार था कि ऐसा करने पर एक तो दोनों राज्यों पर उनका अधिकार हो जाएगा और साथ ही शासन-कार्यों में दक्षता प्राप्त रत्नप्रभा की सहायता से वे भी अपार यश का संपादन कर सकते हैं।

इस विचार के पैदा होते ही रविवर्मा ने रत्नप्रभा के पास दूत न भेजकर स्वयं प्रवेश करके अपनी कामना व्यक्त की।

रविवर्मा का विचार जानकर रत्नप्रभा ने शांत स्वर में कहा—"मेरे साथ विवाह करने की आप कामना करते हैं, यह मेरे लिए अत्यंत भाग्य की बात ही कही जाएगी। लेकिन जो व्यक्ति मेरे पति बनना चाहते हैं, मैं उनकी छोटी-सी परीक्षा लेना चाहती हूँ। क्या यह आप के लिए स्वीकार होगी?"

"क्यों नहीं? यह परीक्षा मेरे लिए अवश्य स्वीकार्य होगी! मैं उस परीक्षा में

सफल होने का प्रयास करूँगा।" रविवर्मा ने उत्तर दिया।

"वैसे परीक्षा कोई बड़ी नहीं है। हिमालय पर्वतों में शंखवृक्ष नामक एक पेड़ है। आप को उसके फूल लाने होंगे।" रत्नप्रभा ने बताया।

"उफ़! यह भी कोई बड़ी परीक्षा है!" ये शब्द कहते रविवर्मा उसी वक़्त वहाँ से निकल पड़े।

घोड़े पर हिमालयों में पहुँचने में रविवर्मा को कोई ज़्यादा समय नहीं लगा। मगर सैकड़ों मीलों की यात्रा करने के बाद भी शंखवृक्ष का पता बतानेवाला उन्हें कोई नहीं मिला। किसी ने यह भी नहीं बताया कि कम से कम वह वृक्ष अमुक प्रदेश में होगा! हज़ारों मीलों में व्याप्त हिमालयों में कई मास बिताकर रविवर्मा इस निश्चय पर पहुँचे कि संभवतः शंख वृक्ष नामक कोई पेड़ न होगा और वह निराश हो लौट पड़े।

जब रविवर्मा अपने देश की सीमा पर पहुँच रहे थे, तब उन्हें पता चला कि उनकी गैरहाज़िरी में पड़ोसी राजा ने उनके राज्य पर आक्रमण किया है जिससे वे न घर के रहे और न घाट के। यह बात उन्होंने रत्नप्रभा को बताई।

रत्नप्रभा ने रविवर्मा के प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा–"राजन, मैंने सुना है कि आप की गैरहाज़िरी में कालनेमी नामक आप के पड़ोसी राजा ने

आप के राज्य का अपहरण कर लिया है। आप चिंता न कीजिए! मैं अपनी सेना के बल पर आप का राज्य पुनः वापस दिलाऊँगी।"

आखिर रत्नप्रभा ने रविवर्मा को उनका राज्य वापस दिलाया। उन्हें गद्दी पर बिठाकर समझाया–"भविष्य में ही सही आप बड़ी दक्षता के साथ अपने राज्य पर शासन कीजिए।"

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन, रत्नप्रभा ने रविवर्मा के सामने जो परीक्षा रखी, क्या उसका कोई अर्थ भी है? रत्तप्रभा ने रविवर्मा के प्रति सहानुभूति दिखाकर उनके खोये हुए राज्य को वापस भी दिलवाया, ऐसी हालत में वह रविवर्मा के साथ विवाह कर सकती थी न-? यह कार्य उसने क्यों नहीं किया? इस संदेह का समाधान जानते हुए भी न देंगे तो आप का सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने उत्तर दिया– "रत्नप्रभा राजनीति में बड़ी दक्ष थी। रविवर्मा ने जब उसके साथ विवाह करने की कामना प्रकट की तब रत्नप्रभा ने रविवर्मा की राज्याकांक्षा भांप ली। मगर उनके शासन की दक्षता की जांच करने के लिए ही उसने उनकी परीक्षा लेनी चाही। यदि वे शासन-कार्यों में कुशल होते तो बड़ी सरलतापूर्वक भांप लेते कि रत्नप्रभा की परीक्षा निरर्थक है। इस बात को ना समझने के कारण ही कहीं प्राप्त न होनेवाले वृक्ष की खोज में अनावश्यक अनेक महीनों का समय व्यर्थ करके वे अपना राज्य खो बैठे। उनके राज्य खोने का कारण स्वयं रत्नप्रभा ही है। इसीलिए उसने रविवर्मा को पुनः उनका राज्य वापस दिलवाया। मगर उसका यह विचार नहीं बदला कि रविवर्मा उसके पति बनने की योग्यता नहीं रखते!"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

सफल योजना

एक गाँव में कमला और विमला नामक दो विधवाएँ थीं। कमला के वैद्यनाथ नामक एक लड़का था और विमला के जानकी नामक एक लड़की थी। कमला के पति और विमला के पति ने सोचा था कि उनके बच्चों के बड़े होने पर वैद्यनाथ और जानकी का विवाह किया जाय। मगर जब उनके बच्चे छोटे ही थे, तभी वे एक ही दुर्घटना में मर गये।

मगर जब बच्चे बड़े हुए तब तक कमला और विमला के विचार बदल गये। कमला ने सोचा कि भारी रक़म दहेज़ में लेकर अपने बेटे का विवाह किया जाय, पर विमला ने अपनी पुत्री का विवाह शहर में रहनेवाले किसी शिक्षित युवक के साथ करना चाहा।

वैद्यनाथ और जानकी बचपन से ही परस्पर शादी करने की इच्छा रखते थे। उनकी माताएँ जब अन्यत्र उनके विवाह के प्रयत्न करने लगीं, तब वे दोनों उन प्रयत्नों को असफल बनाने लगे।

एक दिन मंगलनाथ नामक एक संपन्न गृहस्थ वैद्यनाथ को देखने कमला के घर आ पहुँचा। कमला ने मंगलनाथ का दिल खोलकर आतिथ्य दिया। उस वक़्त वैद्यनाथ खेत पर गया हुआ था। जब उसे मालूम हुआ कि उसकी शादी का प्रस्ताव लेकर कोई सज्जन घर आये हुए हैं, तब वह खाली हाथ घर लौट आया। इसे देख कमला ने पूछा—"बेटा, कुल्हाड़ी कहाँ?"

"वह तो उस पेड़ के पास है जिसे मैं काटना चाहता था।" वैद्यनाथ ने झट से जवाब दिया। कमला ने पूछा—"वह पेड़ कहाँ पर है, बेटा?"

"जहाँ कुल्हाड़ी है, वहीं पर वह पेड़ है।" वैद्यनाथ ने उत्तर दिया।

सरोजा मलिक

मंगलनाथ वैद्यनाथ का यह जवाब सुनकर अवाक् रह गया। इस पर कमला प्रसंग बदलने के ख्याल से बोली–"बेटा, तुम अब तक क्या कर रहे थे?"

"मैं तो नारियल के पेड़ पर चढ़ बैठा था।" वैद्यनाथ ने कहा।

"किसलिए पेड़ पर चढ़ गये थे?" कमला ने पूछा।

"बछड़े की घास के वास्ते?" वैद्यनाथ का उत्तर था।

"कहीं घास पेड़ पर उगती है?" माँ ने पूछा।

यह वार्तालाप सुनकर मंगलनाथ चुपचाप वहाँ से खिसक गया।

इसके बाद कमला ने अपने बेटे की निंदा की और कहा–"लगता है कि तेरी क़िस्मत में कोई अच्छा रिश्ता तै होनेवाला नहीं है?"

"क्या जानकी से बढ़ कर मुझे कोई अच्छा रिश्ता मिल सकता है?" वैद्यनाथ ने उल्टा सवाल किया।

उधर जानकी को देखने शहर से जो महिला आई, उसने पूछा–"बेटी! दाल को स्वादिष्ट बनाने के लिए कैसे पकाना होगा?"

"आग में दाल डाल कर पकाने पर स्वादिष्ट होती है।" जानकी ने कहा।

आगंतुक महिला अचरज में आ गई। इतने में एक मुर्गी घर के भीतर घुस आई। जानकी ने उसे झाड़ू से मारा।

"यह क्या? तुम मुर्गी को झाड़ू से क्यों मारती हो?" जानकी की माँ उस पर नाराज़ हो गई।

"माँ, मैंने सोचा था कि यह तो सास है।" जानकी पश्चात्तापपूर्ण स्वर में बोली।

वह आगंतुक महिला एक भी मिनट वहाँ नहीं रुकी, अपने रास्ते चली गई।

इसके बाद कमला और विमला ने भली भांति समझ लिया कि उनके बच्चे उनके तै किये रिश्तों को माननेवाले नहीं है, तब दोनों ने उन की शादी की और अपने पतियों की कामना की पूर्ति की।

दान

एक जमीन्दार दान देने में बड़ा प्रसिद्ध था। एक बार जमीन्दार अपने अंतरंगी सलाहकार के साथ कहीं जा रहा था। उस वक्त एक याचक ने जमीन्दार के पास आकर पूछा– "सरकार, आप बड़े ही धर्मात्मा हैं। सर्दी से मैं परेशान हूँ। कृपया पहनने के लिए कपड़े दिला दीजिए।"

उस वक्त जमीन्दार का सलाहकार अपने साले के लिए कोई नौकरी दिलाने के लिए जमीन्दार से निवेदन कर रहा था। उसने याचक से बड़ी उदारता के साथ कहा–"अबे, कल मेरे घर आकर ले जाओ।"

याचक ने जमीन्दार के सलाहकार के घर के कई बार चक्कर लगाये। आखिर उसने तंग आकर एक फटा-पुराना कुर्ता फेंकते हुए कहा–"अब तुम जा सकते हो। तुम्हें कपड़े मिल गये।"

याचक ने उस कुर्ते पर लिख दिया–"यह जमीन्दार साहब का दान है।" उसे पहनकर वह सर्वत्र ठाठ से घूमने लगा।

एक बार जमीन्दार ने याचक को देखकर पूछा–"मुझे याद नहीं है कि मैंने तुम्हें ऐसे फटा-पुराना कुर्ता दिया है?"

याचक ने कहा–"आप की ओर से आप के सलाहकार ने मुझे यह कुर्ता दिया है, सरकार।"

फिर क्या था, जमीन्दार ने उसे अच्छे कपड़े देकर भेज दिया।

सोने के सिक्के का रहस्य

रतनपुर के राजा भानुगुप्त की मृत्यु के बाद उनके पुत्र सोमगुप्त गद्दी पर बैठे। रतनपुर व्यापार के लिए बहुत ही प्रसिद्ध था। भानुगुप्त अर्थ शास्त्र के पंडित थे। इस कारण उनके शासन काल में देश का खूब विकास हुआ। उनके मंत्री योग्य थे और मौक़े पर अच्छी सलाहें दिया करते थे।

सोमगुप्त एक तो छोटी-सी उम्र में राजा बने, साथ ही लाड़-प्यार में पलकर दुष्टों की संगति में फंस गये थे। मंत्री जब राजा को सलाह देते कि सोमगुप्त को राजनीति पढ़ाई जाय तो अच्छा होगा! तब उनके पिता कहा करते थे—"अभी तो वह छोटा-सा लड़का है। सीखने के लिए काफी समय पड़ा हुआ है।"

मगर अधेड़ उम्र में ही अचानक भानुगुप्त का देहांत हो गया। इस वजह से राज्य का भार सोमगुप्त पर आ पड़ा। बाईस वर्ष के सोमगुप्त ने अपने दुष्ट मित्रों की सलाह पर कान देकर कई अच्छे राज कर्मचारियों को नौकरी से हटाया। मगर अनेक वर्षों से मंत्री के पद संभालनेवालों का वे अहित न कर पाये; क्योंकि उनके प्रति जनता का अपार विश्वास था।

एक बार राज्य की उत्तरी सीमा पर स्थित पहाड़ी प्रदेश में एक छोटा-सा बलवा हुआ। वह प्रदेश एक भील सरदार के अधीन में था। सेनापति को पहले ही मालूम हुआ था कि उस पहाड़ी प्रदेश में बलवा हो रहा है, उसने तत्काल कड़ी कार्रवाई की और भील राज्य के थोड़े हिस्से पर अधिकार भी कर लिया। मगर सोमगुप्त के मित्रों में से एक व्यक्ति भील सरदार का दोस्त भी था। उस व्यक्ति ने हठ किया कि सेनापति ने जो राज्य भील

सरदार से अपने अधीन कर लिया है, उसे भील सरदार को वापस करके उससे क्षमा मांग लिया जाय।

इस पर सेनापति ने समझाया–"मैं जानता हूँ कि महाराजा भानुगुप्त का जब देहांत हुआ, तब इस भील सरदार ने शत्रु राजा से मिलकर षड़यंत्र रचने की कोशिश की है, इसलिए मेरे बदन में प्राण के रहते मैं इस षड़यंत्र को सफल होने न दूंगा। मैं अपने देश के वास्ते अपनी अंतिम रक्त-बिंदु तक न्योछावर करने को तैयार हूँ।"

सोमगुप्त ने कठोर स्वर में कहा–"यह मेरा आदेश है, तुम्हें इसका पालन करना होगा।"

"तब तो मुझे इस पद से हटा दीजिएगा।" सेनापति ने स्पष्ट शब्दों में उत्तर दिया।

ये बातें सुनने पर सोमगुप्त का दिल घबरा उठा। क्यों कि सेनापति अगर त्यागपत्र दे तो सेना में अराजकता फैल जाएगी। सैनिकों की दृष्टि में सेनापति ईश्वर के समान है। इसलिए राजा सोमगुप्त ने अपने मित्र की इच्छा की पूर्ति होने नहीं दी, उसने सेनापति की इच्छा को अमल करने दिया।

उन दिनों में रतनपुर राज्य के सोने के सिक्के खरे सोने के द्वारा तैयार किये जाते थे। सारे देश में जो कुछ सोना था, लगभग सारा सोना सिक्कों के रूप में प्रचलन में था। उन सिक्कों का पड़ोसी देशों में भी काफी मूल्य था, इस कारण उस देश के व्यापार में वृद्धि होती गई।

लेकिन सोमगुप्त के एक मित्र ने उसे सलाह दी–"आप अभी तक अपने बाप-दादा के जमाने के सिक्के चला रहे हैं, यह कैसी बात है? उन सोने के सिक्कों में थोड़ा तांबा भी मिला दे तो पर्याप्त सोना बच जाएगा जो आप का अपना निजी सोना बन जाएगा।"

फिर क्या था, सोमगुप्त ने उस सलाह के अनुसार टकसाल में मिलावट के सोने

के सिक्के ढलवाये। यह बात जल्द ही दरबारियों पर प्रकट हो गई। भरी सभा में वित्तमंत्री धनपति ने राजा के प्रति आक्षेप प्रकट करते हुए कहा–"महाराज, आप को मुझसे परामर्श किये बिना ऐसा काम करना नहीं चाहिए था। आप के पिता के जमाने में कभी ऐसा काम नहीं हुआ था।"

इस पर सोमगुप्त ने समझाया–"सुनिये, अब तो जमाना बदल गया है। यह मेरे पिताजी का जमाना नहीं, मेरा जमाना है। मुझे जो अच्छा लगेगा, मैं वही करूँगा।"

धनपति ने आवेश में आकर पूछा– "क्षमा कीजिएगा! आप या आप के मित्र मुद्रा शास्त्र के बारे में और धन के प्रचलन के बारे में जानते ही क्या हैं?"

"अबे बूढ़े! धन के बारे में तुम भी क्या जानते हो? सिक्कों में सोने की मात्रा घटने से नुक़सान ही क्या है? सिक्के पर जो मूल्य अंकित है, वही सिक्के का मूल्य होता है! समझें!" राजा ने कहा।

"महाराज! आप भूल कर रहे हैं। मुझ जैसे दीर्घ काल तक अर्थ शास्त्र के क्षेत्र में रहनेवाला व्यक्ति ही खालिस सोने तथा मिलावट के सोने के अंतर उसकी गंध देखकर बता सकता है।" धनपति ने समझाया।

इससे धनपति चुप नहीं रहा, क्रोध में आकर राजा को मूर्ख बताया। यह बात सुनते ही सोमगुप्त के अनुचरों ने सिपाहियों को संबोधित कर चिल्लाकर कहा–"इसे बन्दी बना दो।" राजा का अपमान करने के कारण धनपति को कारागार में बन्दी बनाया गया।

राजा सोमगुप्त का व्यवहार किसी को भी पसंद न आया, पर वे प्रकट रूप में राजा का विरोध करने की हिम्मत न कर सके! धनपति को कारागार में बन्दी बनाने की वज़ह से जो लोग असंतुष्ट थे उनमें दरबारी जादूगर मायाधर भी एक था। उसने कारागार में जाकर धनपति

से बातचीत की और उस वार्तालाप से संतुष्ट होकर अपने घर लौट आया ।

सोमगुप्त बचपन में मायाधर के साथ लगा रहता था। उसके इंद्रजाल पर सोमगुप्त मुग्ध था ।

एक दिन सोमगुप्त अपने महल में अकेले विश्राम कर रहा था, तब मायाधर ने जाकर धनपति के प्रसंग की चर्चा की और कहा–"महाराज, शायद धनपति का कहना सच हो, क्या पता? कभी कभी अनुभव के आधार पर अद्भुत शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। शायद खालिस सोने तथा मिलावट के सोने के बीच का अंतर धनपति उसकी गंध देख बता सकते हो। इसके अलावा धनपति अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ हैं। सोने में मिलावट की गंध का पता लगाने की धनपति की शक्ति की जांच करना उचित होगा! अगर सचमुच उसके भीतर ऐसी शक्ति हो तो उसे क्षमा किया जा सकता है। चाहे उसने आप को भले ही बुरा-भला कहा हो, पर उसने दीर्घ काल तक ईमानदारी से देश की सेवा की है।"

"उसकी परीक्षा लेने का उपाय क्या है?" सोमगुप्त ने मायाधर से पूछा।

"चार मिलावट के सिक्के और एक खरे सोने का सिक्का एक ही प्रकार की

थैलियों में बन्द कर सबको मिला देंगे। तब खरे सोनेवाले सिक्के की थैली निकालने को कहेंगे। अगर वह ऐसा कर सकेगा तो हमें मानना होगा कि वह सचमुच अर्थ शास्त्र के विशेषज्ञ हैं। आप का क्या विचार है?" मायाधर ने कहा।

सोमगुप्त ने मान लिया। इसके बाद राजा की अनुमति लेकर मायाधर ने धनपति की परीक्षा लेने का प्रबंध किया। एक ही आकृति तथा रंग की पाँच थैलियाँ लीं। एक थैली को अपनी ओर खोलकर पकड़ लिया, पतली तीली से थैली के एक कोने में गोंद चिपकाकर दबाया। बाक़ी चारों थैलियाँ यथा प्रकार रखी गई।

धनपति की परीक्षा के दिन दरबार खचाखच भरा हुआ था। मेज़ पर चार मिलावट के सोने के सिक्के और एक खरा सोने का सिक्का थे। मायाधर ने धनपति के सामने ही एक एक सिक्का एक एक थैली में डाल दिया और थैलियों के मुंह चिपका दिये। इसके बाद सिक्कोंवाली थैलियों को एक बड़े बर्तन में डाल दिया। तब धनपति की आँखों पर पट्टी बांध दी गई। बर्तन पर एक कपड़ा ढक दिया गया। धनपति बर्तन के निकट आया, उस पर ढके कपड़े के नीचे से अपने हाथ बर्तन में रखे। इसके बाद धनपति ने थैलियों में ढूंढ़कर जिस थैली को उसे निकालना था, दो क्षणों में निकाल दिया।

धनपति के द्वारा प्राप्त थैली को फाड़कर मायाधर ने उसमें से एक सिक्का बाहर निकाला। वह खरे सोने का सिक्का था। इसे देख सभी लोग विस्मय में आ गये।

उसी वक़्त सेनापति कुछ विदेशी नागरिकों को बन्दी बनाकर सभा में पहुँचा। उन बंदियों को देखते ही सोमगुप्त के मित्रों के चेहरे पीले पड़ गये। वे लोग खिसकना चाहते थे, तभी सेनापति ने उन्हें बन्दी बनाने का आदेश दिया।

विदेशियों ने अपना अपराध स्वीकार किया। यह भी प्रकट हुआ कि कुछ अन्य देशों ने सोमगुप्त के मित्रों की मदद से रतनपुर पर आक्रमण करने का षड़यंत्र किया है, तब उसने अपनी गलती मान ली और उस दिन से अपने मंत्रियों की मदद से सावधानी से शासन करने लगा।

मायाधर ने एक थैली के एक कोने में गोंद चिपकाकर उसे दबा दिया था। उसी थैली में उसने खरा सोने का सिक्का डाल दिया था। अन्य मिलावट के सोने के सिक्के उन थैलियों में कोने तक पहुँच गये थे। मगर खरे सोनेवाला सिक्का कोने से थोड़ी दूर पर ही रुक गया था। इस कारण धनपति अपने स्पर्श के द्वारा खरे सोने के सिक्केवाली थैली का आसानी से पता लगा सका।

विचित्र सौदा

सत्यशील नामक राजा का एक नियम था। उसके पास प्रति दिन सवेरे कोई भी व्यापारी आकर जो भी चीज़ बेच देता, उसका सौदा किये बिना ख़रीद लेता था। उसका विश्वास था कि ऐसा करने पर उसका तथा देश का भी लाभ होगा।

उसी राजधानी में एक गरीब ब्राह्मण था। उसे लगा कि कभी न छूटनेवाली उसकी दरिद्रता को राजा के हाथ क्यों न बेच दिया जाय? यों विचार कर उसने अपने फटे कंबल और फटे जूतों को एक गठरी में बांध लिया, सर पर रखकर सवेरे ही राजमहल में जाकर चिल्ला उठा–"इसे कोई ख़रीद लेंगे? साधारण आदमी न ख़रीद सकनेवाला सौदा है यह।"

राजा ने उसे महल के अन्दर बुला भेजा और पूछा–"इस गठरी में कौन सा माल है?"

"महाराज! यह तो मेरी दरिद्रता है। परंपरा से यह मुझे प्राप्त हो गई है।" ब्राह्मण ने जवाब दिया।

"कितने में बेचोगे?" राजा ने पूछा।

"पांच सौ स्वर्ण मुद्राओं में बेचूंगा।" ब्राह्मण ने कहा।

राजा ने पांच सौ स्वर्ण मुद्राएँ देकर उस गठरी को ख़रीद लिया।

माँ और बेटा

वरलक्ष्मी नामक एक धनी औरत के चन्द्रशेखर नामक इकलौता बेटा था। चन्द्रशेखर के बचपन में ही उसके पिता का देहांत हो गया था। इसलिए वरलक्ष्मी ने अपने बेटे को लाड़-प्यार से पाला-पोसा और उसके बड़े होने पर सुभद्रा नामक एक कन्या के साथ विवाह भी किया।

सुभद्रा ससुराल में आई। अपनी सास के सारे व्यवहार उसे पसंद आये, मगर उसकी दानशीलता उसे खटकने लगी। वरलक्ष्मी को दान देने में बड़ा आनंद मिलता था। इससे सुभद्रा को वास्तव में दुखी होने की कोई जरूरत न थी। क्योंकि वरलक्ष्मी के यहाँ पर्याप्त संपत्ति थी। मगर सुभद्रा स्वभाव से कंजूस थी। वह यह सोचकर दुखी होने लगी कि उसका पति जो कुछ कमाता है, सारा का सारा दान-धर्म के पीछे उसकी सास लुटा रही है।

सुभद्रा अपने मन की इस व्यथा को ज्यादा दिन छिपा न सकी। एक बार उसने मौक़ा पाकर यह बात अपनी सास से कह भी दी। इस पर वरलक्ष्मी ने समझाया—"बेटी! हमारे पास जो कुछ है, उसमें से थोड़ा-बहुत दूसरों में दान देना कोई गलत बात नहीं है। यह सारी संपत्ति हम अपने पीछे थोड़े ही ले जाते हैं?"

मगर अपनी सास को दान करते देख सुभद्रा खीझती ही गई। आखिर वरलक्ष्मी ने तंग आकर अपनी बहू से कह दिया—"तुम अपनी मायके से जो कुछ लाई हो, उसे तो मैं लुटा नहीं रही हूँ, अपनी ही संपत्ति हम दान दे रहे हैं; इसलिए तुम नाहक़ चिंता मत करो।"

सुभद्रा ने भांप लिया कि अपनी सास की इस आदत को बदलना संभव नहीं है, उसने एक दिन अपने पति से कहा—"तुम

राजेन्द्र शर्मा

अपनी माँ का व्यवहार देख रहे हो? वह इसी प्रकार दान देती जाएगी तो हमें एक दिन राह का भिखारी बनना पड़ेगा। इसलिए हमें अभी से सावधान रहना चाहिए। तुम अपनी माँ को समझाओ।"

"माँ को तुम या मैं कहाँ समझा सकते हैं? वह तो सारी बातें जानती हैं।" यों समझा कर चन्द्रशेखर ने प्रारंभ में अपनी पत्नी की बातों पर ध्यान नहीं दिया। आखिर वह भी अपनी पत्नी की बातों में आ गया। उसने अपनी पत्नी से पूछा–"तब तो बताओ, मैं क्या करूँ?"

"आगे हमारे भी बच्चे पैदा हो सकते हैं। उनके वास्ते ही सही हमें अभी से अलग रहना होगा!" सुभद्रा ने समझाया।

अपनी पत्नी की बातों में आकर चन्द्रशेखर ने संपत्ति का बंटवारा कर लिया और वह अपनी पत्नी के साथ अलग रहने लगा। थोड़े समय बाद सुभद्रा के भी एक लड़का हुआ।

पुत्र के पैदा होने के बाद सुभद्रा में परिवर्तन देख चन्द्रशेखर विस्मय में आ गया। सुभद्रा अपने बेटे के लाड़-प्यार में पड़ कर अपने पति तक को भूल बैठी।

एक दिन संध्या को चन्द्रशेखर घर लौटा तो देखता क्या है? सुभद्रा पड़ोसी औरत को समझा रही थी–"हमें तो अपने बच्चों के पालन-पोषण में बड़ी सावधानी बरतनी है। हम बड़ी तक़लीफ़ें उठा कर इन्हें पालते हैं, मगर बड़े होने पर ये लोग
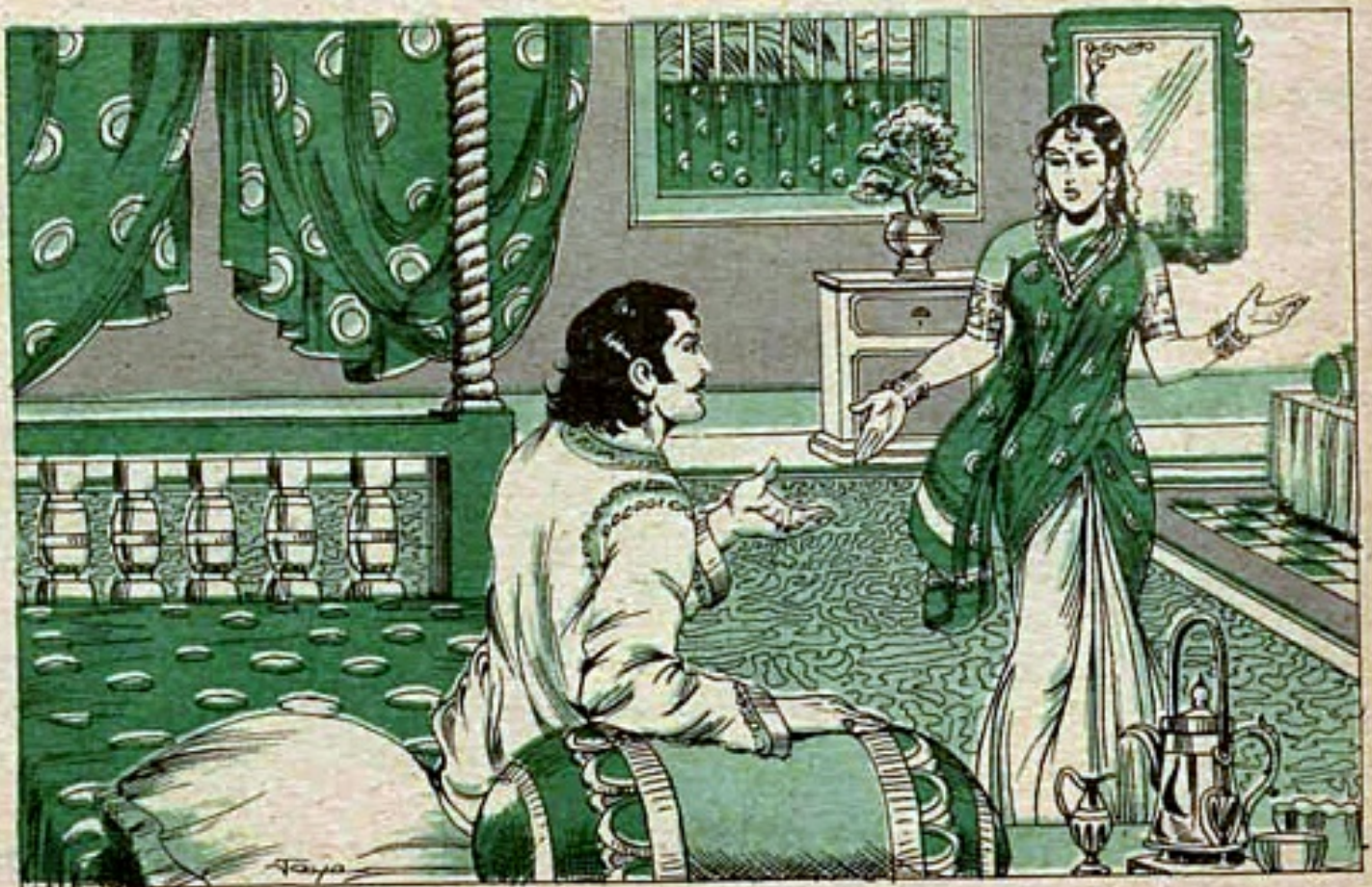
हमारा ख्याल रखते हैं, इसकी क्या गैरंटी है? इसलिए बुजुर्ग कहा करते हैं, बचपन में माता-पिता के ये लाड़-प्यार बनते हैं, मगर बड़े होने पर बीबी के गुलाम बन जाते हैं।"

इस पर सुभद्रा आवेश में आकर कह रही थी–"चाहे कोई और ऐसा बन जाय, पर मैं अपने बेटे को ऐसा बनने न दूँगी। मैं अपनी सारी शक्ति लगा कर उसे इस योग्य बनाऊँगी जिससे वह अपने माता-पिता के ऋण चुकाने योग्य उत्तम पुत्र बन सके। पर माता-पिता की मेहनत पर पल कर अपने स्वार्थ को साधनेवाले मूर्ख के रूप में उसे बनने न दूँगी।"

ये बातें चन्द्रशेखर ने सुन लीं और दूसरे ही दिन उसने अपनी माताजी के साथ रहने का उचित प्रबंध दिया।

इसे देख सुभद्रा ने पूछा–"यह क्या? आप तो पागल नहीं हो गये?"

"नहीं, मेरे सिर पर जो पागलपन सवार था, उससे मुक्ति पा ली। सुभद्रा, तुम स्वार्थी हो। तुम्हारा पुत्र अपना स्वार्थ साधनेवाला मूर्ख न बने, यही तुम्हारा विचार है न? पर तुम्हारा पति ऐसा मूर्ख बने तो तुम्हें कोई परवाह नहीं है। मैं यह साबित कर रहा हूँ कि मैं भी अपना स्वार्थ साधनेवाला मूर्ख नहीं हूँ।"

सुभद्रा ने पिछले दिन पड़ोसी महिला से जो बातें कही थीं, वे उसे याद हो उठीं। इस कारण वह एक दम निरुत्तर रह गई।

इस पर चन्द्रशेखर ने सुभद्रा को समझाया–"देखो सुभद्रा! तुम अपने पुत्र को जैसे लाड़-प्यार से पाल-पोस रही हो, वैसें ही मेरी माँ मुझ पर बड़ी आशा रखी हुई है कि मैं उसके बुढ़ापे में उसे सुख पहुँचाऊँगा। ऐसी हालत में मैं केवल अपने स्वार्थ में पड़ कर उस का निरादर करना अन्याय है न?"

ये बातें सुनने पर सुभद्रा की आँखें खुल गईं। इसके बाद सुभद्रा अपनी सास के प्रति बड़ा ही आदर करते उसे सब तरह से सुखी रखने का प्रयत्न करने लगी।
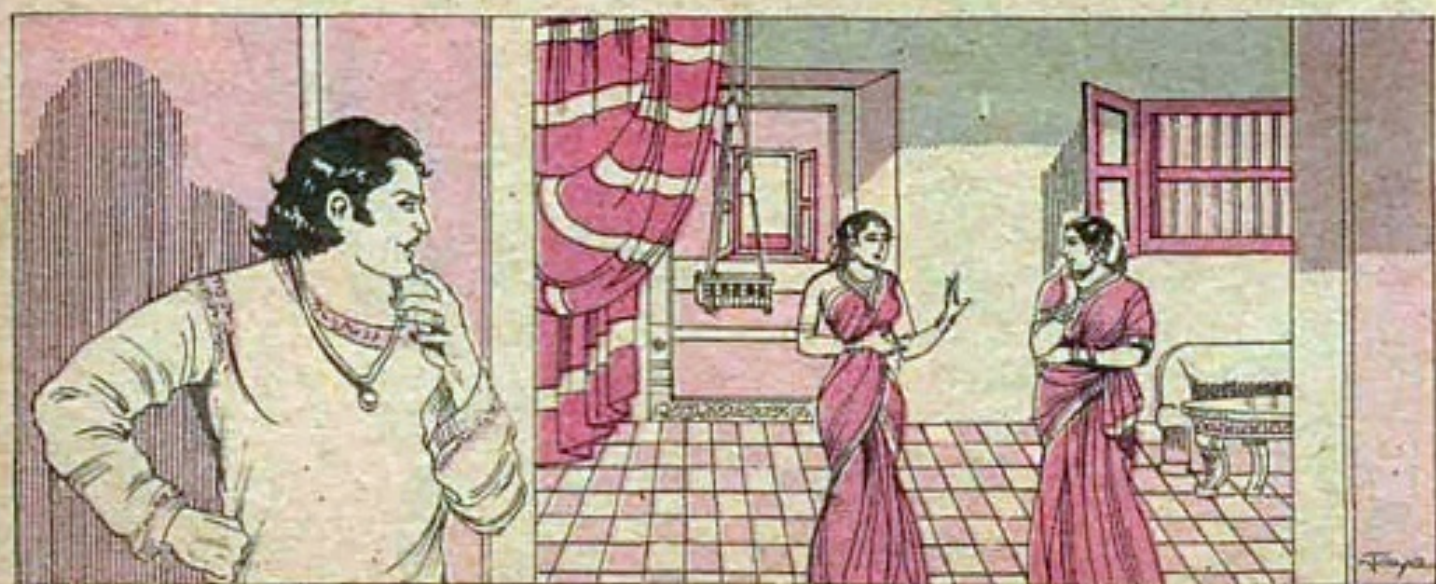
राक्षस के अत्याचार

गोविंद अपने कुत्ते के साथ एक पर्वत के समीप पहुँचा। उसके समीप में कांचनपुर नामक एक गाँव है। गोविंद पर्वत की तलहटी में स्थित तालाब में प्यास बुझाकर आराम कर रहा था, तभी एक विचित्र घटना घटी।

समीप के गाँव से एक आदमी एक गधा और एक बकरी को हांककर गुफ़ा की ओर आ पहुँचा। गधे की पीठ पर अन्न की गठरियाँ और भुनी हुई मुर्गियाँ थीं। गुफ़ा के सामने पहुँचते ही उस आदमी ने बकरी को भी गधे की गर्दन में बांध दिया और उन्हें गुफ़ा के भीतर हांक कर बाहर खड़ा रह गया। बकरी छटपटाते चिल्ला रही थी, पर गधा उसे गुफा के अन्दर खींच ले गया।

गोविंद ने उस आदमी से पूछा—"गुफ़ा के अन्दर कौन रहता है? तुमने इतना आहार क्यों भेज दिया? तुम बाहर क्यों रह गये?"

उस व्यक्ति ने पल-भर आश्चर्य के साथ गोविंद की ओर देख कहा—"कहने को क्या है? साधारण बात है। नमालूम मेरे गाँव का पिंड कब छूटेगा? फिलहाल तो हमारी जानें आफ़त में फंसी हुई हैं।"

"मैंने कुछ गाँवों का पिंड छुड़ाया है। बताओ, तुम्हारे गाँव पर कैसे अत्याचार हो रहे हैं? शायद मैं कोशिश करके उन्हें दूर कर सकूँ। वास्तव में बात क्या है?"

इस पर वह व्यक्ति उठ कर हंस पड़ा और बोला—"अगर ये अत्याचार मंत्रों के द्वारा दूर हो जाते तो मेरे गाँव का भूतलिंग कभी के उन्हें दूर कर देते। लेकिन उसी को निगलनेवाले राक्षस का तुम क्या बिगाड़ सकते हो? वह तो तुम को एक ही बार में चबा डालेगा। कहा जाता है कि यह

रविशंकर त्रिपाठी

राक्षस बहुत समय पहले इस पहाड़ी गुफ़ा में रहकर मेरे गाँव के सभी लोगों को समाप्त कर चुका है। उस वक़्त जो लोग बच रहें, वे गाँव को छोड़ भाग गये थे। इसके एक साल बाद वे लोग एक-एक करके लौट आये, उन्हें यक़ीन हो गया कि राक्षस उस गुफ़ा को छोड़ चला गया है, फिर इधर छे महीने से गाँव की भेड़-बकरियाँ और मुर्गियाँ भी गायब होने लगीं। एक दिन भूतलिंग के शिष्यों को पहाड़ पर ताड़ के पेड़ के बराबर का एक राक्षस दिखाई दिया। भूतलिंग बड़ा ही हिम्मतवर था। वह अकेले ही गुफ़ा के अन्दर चला गया, राक्षस से बात करके मनाया कि अगर गाँववाले बारी-बारी से उसके यहाँ खाना भेज दिया करेंगे तो वह गाँववालों की कोई हानि न करेगा। गाँववालों ने भी भूतलिंग का यह समझौता भंग करके एक दुष्ट कार्य किया। एक दिन भूतलिंग का परिवार और उसके चार शिष्यों के कुटुंब भी दूर प्रदेश के एक मेला देखने चल पड़े। इसके बाद फिर कभी उन का पता न चला। उन्हें तो पहाड़ी तलहटी से होकर जाना था। गाँववालों के मन में यह शंका पैदा हुई कि राक्षस ने उन्हें गुफ़ा के भीतर खींच ले जाकर खा डाला होगा। इस पर भूतलिंग को बड़ा गुस्सा आया। वह तो बड़े-बड़े भूत-प्रेत और पिशाचों को कंपा देनेवाला है। राक्षस ने ऐसा विश्वासघात किया तो क्या वह सहन कर सकता था? एक दिन वह अपने चारों शिष्यों को साथ ले गुफ़ा के अन्दर चला गया, पर वे लोग फिर कभी लौट कर नहीं आये। राक्षस ने उन्हें भी खा डाला होगा। इस पर गाँववालों ने सभा बुलाई, राक्षस के पास रोज खाना भेजते हुए भगवान पर भरोसा रखने का निर्णय किया। अब समझ गये हो न? हमारे गाँव पर कैसी विपत्ति आ पड़ी है?"

गोविंद के मन में राक्षस के प्रति संदेह हुआ। उसने पूछा—"सुनो भाई, राक्षस ने

भूर्तलिंग और उसके चार शिष्यों को खा डाला था न? क्या इसके बाद उस राक्षस को किसी ने देखा भी है?"

"नहीं, राक्षस अपने पुराने रिवाज़ का ठीक से पालन कर रहा है, वरना हमारे गाँव को वह उजाड़ कर रख देता।" उस आदमी ने बताया।

गोविंद को लगा कि राक्षस की कहानी ही झूठी है। जिन लोगों ने कभी पहाड़ पर राक्षस को देखा था, वे लोग भी उसके आहार बन गये। इसके बाद उसने किसी की हानि नहीं की, यह बात कैसे यक़ीन की जा सकती है? अगर राक्षस की कहानी कल्पित है तो यह बात भूर्तलिंग से छिपी नहीं है। क्योंकि उसीने तो राक्षस के साथ समझौता कर लिया था? अगर राक्षस की बात झूठी है तो भूर्तलिंग और उसके अनुचर गुफा के भीतर होंगे। उनके परिवार तो इसके पूर्व ही गुफ़ा में पहुँच गये हैं। उनका आहार रोज गाँववाले भेज ही रहे हैं।

अपनी इस कल्पना को सत्य मान कर गोविंद ने अपनी आगे की योजना बनाई और कुत्ते को साथ ले गाँव में चला गया।

उस दिन रात को गहरे अंधेरे में गोविंद गुफ़ा के समीप पहुँचा और उसकी आहट लेने लगा। उसे लगा कि गुफ़ा के भीतर

कई लोग हैं। गुफा के भीतर से दिये की रोशनी फूट रही थी। गोविंद दबे पाँव गुफा के भीतर पहुँचा। उस धुंधली रोशनी में उसे पंद्रह-बीस बच्चे औरतें और मर्द अस्पष्ट दिखाई दिये। वे सब मांस खा रहे थे, पर राक्षस का कहीं पता न था।

दूसरे दिन गोविंद ने गाँव के युवकों को बुला कर उन्हें समझाया—"सुनो भाइयो, मैं कल रात को गुफा के अन्दर चला गया। यह बात सच है कि गुफा में कई राक्षस हैं। मगर वे कोई भयंकर राक्षस नहीं। ऐसे अनेक लोगों को मैंने इसके पूर्व सबक़ सिखाया। ऐसे दुष्टों से डर

कर तुम लोगों का अपने पेट काट कर उन्हें आहार भेजना बड़ी मूर्खता है ।"

गोविंद की बातें सुनने पर युवकों का उत्साह उमड़ पड़ा। गोविंद ने उन्हें समझाया–"सुनो, मैंने तुम्हें जो बातें बताईं, उन्हें तुम्हें सावधानी से समझना होगा। अगर एक बार कोई राक्षस या खूंख्वार जानवर मनुष्य के मांस का स्वाद लेता है तो वह भेड़-बकरियों के मांस से कभी संतुष्ट नहीं होगा। मगर गुफा के अन्दर रहनेवाले राक्षस मनुष्यों के वास्ते गुफा को छोड़कर बाहर नहीं आ रहे हैं और न वे किसी को दिखाई दे रहे हैं। इसलिए अब हमारा कर्तव्य इन राक्षसों का शिकार खेलना है। इसके लिए हमें बड़ी भारी तैयारी करने की कोई जरूरत नहीं है। चलो, गुफा के द्वार पर लकड़ियां ढ़क कर उसमें आग लगायेंगे। राक्षस को दम लेना मुश्किल हो जाएगा। वे घबराकर बाहर चले जायेंगे, तब उनकी मरम्मत करेंगे।"

गोविंद का कार्यक्रम कुछ ही क्षणों में अमल किया गया। गुफा के द्वार पर लकड़ियां जमा करके उनमें आग लगाई गई। भीतर रहनेवालों का दम घुटने के कारण जलनेवाली लकड़ियों को चीरते बाहर निकल आये। गांववाले सोच रहे थे कि गुफा के अन्दर से राक्षस बाहर निकल आयेंगे, मगर भूतलिंग, उनके अनुचर, औरतें और बच्चे बाहर आ निकले, इसे देख गाँववाले चकित रह गये।

"भाइयो, देखते हो न? ये सब तुम्हारे परिचित राक्षस ही हैं, कभी कोई राक्षस यहाँ आया था, इस कहानी को आधार बना कर इन लोगों ने गाँव को लुटने की कैसी योजना बनाई है?" गोविंद ने समझाया।

इसके बाद भूतलिंग और उसके अनुचर गाँववालों को अपना चेहरा दिखा न पाये, वे सब उस गाँव को छोड़ अपने परिवारों के साथ कहीं चले गये।

तब गोविंद गाँववालों से विदा लेकर दूसरे गाँव की ओर चल पड़ा।

फरक

विजय नगर के महामंत्री तिम्मरुसु के घर में दो नौकर काम किया करते थे। दोनों विश्वासपात्र थे। हर साल महामंत्री उनकी तनख्वाह बीस सिक्के बढ़ा देते थे।

एक वर्ष महामंत्री ने एक सेवक का वेतन बीस सिक्के बढ़ाया और दूसरे का चालीस सिक्के बढ़ाया। पहला नौकर तो चुप रहा, मगर ज्यादा वेतन पानेवाले ने महामंत्री से इस फरक का कारण पूछा।

"तुम्हारे भीतर परोपकार की भावना है, दूसरे में नहीं है।" महामंत्री ने जवाब दिया।

"सरकार, यह बात आप कैसे जानते हैं?" सेवक ने पूछा।

पिछले दिन रात को एक भिखारी ने इसके घर जाकर मुट्ठी भर खाना माँगा तो इसने उसे दुतकारकर भेज दिया, इसके बाद वह तुम्हारे घर गया। तुमने उसे भर पेट खाना खिलाया और पुराने कपड़े भी दिये। इसलिए तुम्हारा जो वेतन बढ़ाया गया है, वह दान-धर्म के पीछे ख़र्च हो जाएगा।" महामंत्री ने समझाया।

"यह बात तो सच है, मगर आप को कैसे मालूम है?" सेवक ने अचरज में आकर पूछा।

"क्यों कि वह भिखारी मैं ही था।" महामंत्री ने जवाब दिया।
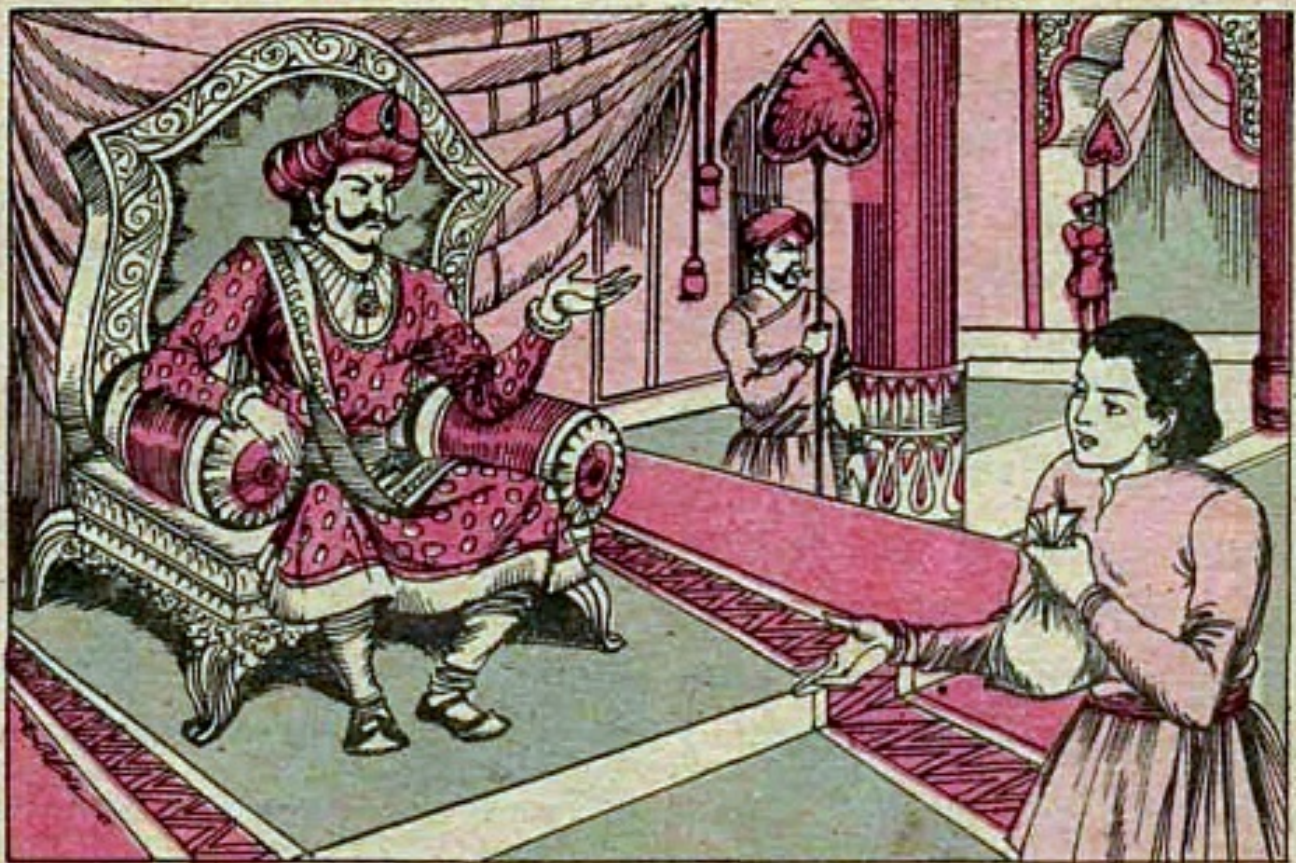
अज्ञात चोर

एक बार विदर्भ देश के पश्चिम भाग में अधिक वर्षा के कारण कई गाँव जल मग्न हो गये, साथ ही कई लोग मर गये। इस पर उस देश के राजा ने जीवन नामक एक राजकर्मचारी के द्वारा बाढ़ पीड़ित क्षेत्र के लोगों में बांटने के वास्ते बहुत-सा धन भेजा।

जीवन जब एक पहाड़ी प्रदेश में पहुँचा, तब उसे वहाँ पर गंगादास नामक एक डाकू मिला जो इसके पूर्व डाका डालते वक़्त पकड़े जाकर कारागार में सजा भोग चुका था। उस वक़्त जीवन ने कारागार में गुप्त रूप से गंगादास को कुछ सुविधाएँ पहुँचाई थीं।

गंगादास ने जीवन को देखते ही प्रणाम किया और अपने घर आतिथ्य पाने की प्रार्थना की। इस पर जीवन ने मान लिया। उस निर्जन प्रदेश के छोटे से गाँव में जीवन को आतिथ्य प्राप्त हुआ, इसलिए वह बड़ा खुश हुआ, साथ ही गंगादास को देखते ही जीवन के मन में एक उपाय सूझा। वह यह कि अगर गंगादास उसकी बात मान ले तो वह अपने साथ लाये धन को हड़प सकता है।

गंगादास के रमाबाई नामक एक कन्या थी। उसने जीवन को खाना बनाकर खिलाया। जीवन ने गंगादास को एकांत में अपनी योजना बनायी और कहा—"मैं तुम्हारी कन्या के साथ विवाह करना चाहता हूँ। इसलिए जहाँ तक हो सके तुम्हें जल्द ही कारागार से मुक्त होने का उपाय करूँगा।"

जीवन के कहे अनुसार करने को गंगादास ने मान लिया। इसके बाद जीवन ने जहाँ-तहाँ अपने कपड़े फाड़ डाले,

कमलनाथ त्यागी

बदन पर छोटे-मोटे घाव बनाये, राजा के पास जाकर बोला–"महाराज, अमुक पहाड़ी प्रदेश के समीप में गंगादास नामक डाकू ने अपने अनुचरों के साथ मुझ पर अचानक आक्रमण किया, मुझे पीटकर आप के द्वारा भेजा गया सारा धन लूट लिया है।"

राजा ने तत्काल सिपाहियों को भेजकर गंगादास को बन्दी बनाया। गंगादास ने सिपाहियों से बचने की कोशिश नहीं की। उल्टे वह इस तरह उनका बन्दी बना, मानो वह इसके लिए पहले से ही तैयार हो! गंगादास का इस प्रकार आसानी से बन्दी बनना राजा के लिए भी आश्चर्य की बात थी। देखने में भी गंगादास धनी और दल के अधिपति के रूप में प्रतीत नहीं हुआ। फिर भी राजा ने उसकी सुनवाई की और उसे फांसी की सजा सुनाई।

गंगादास को फांसी की सजा प्राप्त होने पर जीवन ने ऐसा अनुभव किया, मानो उसके सर से कोई बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो! वैसे जीवन के मन में गंगादास की कन्या के साथ विवाह करने का कोई उद्देश्य न था, इस कारण उसने अपने घर आई हुई रमाबाई को नौकरों से खूब पिटवाकर खदेड़वा दिया। तब वह एक धनवान की पुत्री के साथ विवाह करने का निश्चय करके उस प्रयत्न में निमग्न हो गया। जीवन अपने विवाह के प्रयत्न में था,

तभी एक दिन अचानक गंगादास जीवन के घर आ धमका और उसने धमकी दी– "जीवन, तुम मेरे साथ दगा करोगे? मेरी बेटी के साथ विवाह करने का वचन देकर उसे घर से निकाल देते हो? देखते रह. जाओ बेटा, मैं तुम्हें इसका मजा चकाऊँगा।"

जीवन घबराकर बोला–"मैं शादी की यह सारी तैयारी रमाबाई के साथ विवाह करने के लिए ही कर रहा हूँ। मगर यह बताओ, तुम कारागार से छूटकर कैसे भाग आये?"

"मैं इस बूढ़े की मदद से कारागार से छूट आया हूँ।" इन शब्दों के साथ अपने साथ आये एक बूढ़े को दिखाकर गरजकर बोला–"जीवन, मैं तुम्हारी बातों पर बिलकुल यक़ीन नहीं कर सकता। मेरे हिस्से का धन मुझे दे दो।"

"तुम्हारे हिस्से का धन कैसा? तुम लोगों का समझौता क्या है?" बूढ़े ने जीवन से पूछा।

जीवन ने अपना सारा वृत्तांत बूढ़े को सुनाकर नम्र शब्दों में कहा–"मैं मानता हूँ कि रमाबाई के साथ मेरा विवाह न करना मेरी गलती है। मुझे क्षमा कर दो। मैं माफ़ी माँगता हूँ।"

फिर क्या था, उसी वक़्त बूढ़े ने जीवन के हाथों में हथ कड़ियाँ लगाईं और राजा ने अपना वेष बदल डाला।

अपने सामने राजा को देख जीवन चौंक पड़ा। इस पर राजा ने समझाया– "गंगादास का इतनी आसानी से बन्दी होते देख मेरे मन में संदेह पैदा हुआ। मुझे लगा कि इसमें तुम्हारा भी हिस्सा होगा। इसके बाद गंगादास को फांसी की सजा सुनाने पर उसने असली बात खोल दी। उसके कथन को तुमने भी सत्य बताया। गंगादास जैसे डाकुओं की अपेक्षा तुम्हारे जैसे अज्ञात चोरों से ज्यादा खतरा है। तुम जैसे लोगों को देश से निकालने पर ही राज्य का कल्याण होगा।"

सिपाही चेतसिंह

सिपाही चेतसिंह का बदन दिन व दिन मोटा बनता गया। उस का काम रात के वक़्त पहरा देने का था। पर बात यह थी कि वह दौड़ कर चोर को पकड़ नहीं पाता था।

एक बार चेतसिंह के अधिकारी ने उस से पूछा—"तुमने इधर किसी अपराधी को नहीं पकड़ा। बात क्या है?" चेतसिंह ने कहा था—"सरकार, अपराधी मेरे नाम से थर्रा उठते हैं, इस कारण कोई अपराध करने की हिम्मत ही नहीं करता।" मगर लोग शिकायतें करते ही रहें और चेतसिंह को डांट पड़ती ही रही। इस पर चेतसिंह ने सोचा कि किसी न किसी प्रकार एक अपराधी को पकड़ कर अधिकारी की प्रशंसा पानी है।

अपराधियों को पकड़ने से चेतसिंह का दुहरा लाभ भी हो सकता था। उसने अपनी पत्नी को वचन दिया था कि अगली दीपावली तक उसे एक चन्द्रहार बनाकर देगा। इस वास्ते उसने बड़ी मुश्किल से तीन सौ रुपये जोड़ रखे थे। अगर कोई अपराधी हाथ लगे और वह दो सौ रुपये घूस दे, तो चेतसिंह की पत्नी को चन्द्रहार मिल सकता था।

एक दिन रात के वक़्त चेतसिंह लाठी घुमाते गाँव के छोर पर स्थित शिवाले की तरफ़ चला आया। अंधेरे में उसे लगा कि कोई शिवाले के चबूतरे पर दुबक कर बैठा है।

चेतसिंह ने गरज कर पूछा—"अबे, तू कौन है? आधी रात के वक़्त यहाँ पर तू क्या करता है?" इस पर पंद्रद साल का लड़का डरते-डरते चेतसिंह के समीप आया। चेतसिंह ने एक हाथ से लाठी उठा कर दूसरे हाथ से उसकी गर्दन पकड़

वीरेन्द्रकुमार मिश्र

कर पूछा–"अबे, सच बता! तू कौन है? चोर जैसा लगता है।"

लड़का सहम कर बोला–"हुजूर! मैं चोर नहीं हूँ। मेरे बापू मार डालेंगे, इस डर से यहाँ आकर छिप गया हूँ।"

"तुम्हारा बापू तुम को मार क्यों डालेगा?" चेतसिंह ने अचरज में आकर पूछा।

"मैं क्या जानूं? मैं जब शाम को घर लौटा तो मेरी माँ बोली–'तेरा पिता तुझे और मुझ को भी मार डालेगा।' इसलिए डरकर मैं यहाँ भाग आया हूँ। तब से यहीं छिप कर बैठा हूँ।" लड़के ने जबाब दिया।

चेतसिंह को अपना कर्त्तव्य याद हो आया। एक हत्यारे के हाथों में एक भोले लड़के की हत्या होने के पहले ही उसे बचाना है।

चेतसिंह ने लड़के को हिम्मत बंधवाई और उसके पीछे लड़के का घर पहुँचा। चोर को चोरी करने के पहले पकड़ना है। इसी नीति के अनुसार हत्यारे को हत्या करने के पहले ही पकड़ना है।

चेतसिंह ने लड़के को समझाया–"हम गुप्त रूप से घर के अन्दर घुस जायेंगे।" लड़का पिछवाड़े की दीवार लांघकर भीतर पहुँचा। चेतसिंह बड़ी मुश्किल से पिछवाड़े की दीवार पर चढ़ गया। मगर वह मिट्टी की दीवार पहले ही वर्षा के कारण भीग चुकी थी, चेतसिंह के बोझ से टूटकर गिर पड़ी। चेतसिंह को लगा कि उसकी कमर ही टूट गई है।

इस बीच घर के भीतर से आहट हुई, साथ ही यह आवाज सुनाई पड़ी–"मत मारो! मत मारो!" चेतसिंह ने इस उत्साह में आकर कि वह हत्यारे को पकड़ने जा रहा है, पिछवाड़े का दर्वाजा ढकेल दिया। दर्वाजे के भीतरी ओर कुंड़ी चढ़ाई गई थी, मगर चेतसिंह ने जोर से धक्का दिया था, इस वजह से वह पुराना किवाड़ टूटकर गिर पड़ा।

बड़ी उद्विग्नता के साथ भीतर घुसनेवाला चेतसिंह उस दृश्य को देख विस्मय में आ गया। लड़के की माँ खाट पर बैठी थी। लड़के का बाप एक लाठी से चूहे को मार रहा था।

चूहे को मारकर लड़के के बाप ने लाठी एक ओर फेंक दी और सिपाही को डांटकर पूछा–"आप सिपाही होकर भी हम पर यह अत्याचार कर रहे हैं? दर्वाज़े पर दस्तक दे तो क्या हम खोल नहीं देते? दर्वाजा तोड़कर भीतर क्यों आवे?"

"तुम अपनी पत्नी की हत्या करनेवाले थे, इसलिए उसे बचाने आया हूँ।" चेतसिंह ने जवाब दिया।

लड़के का बाप नाराज होकर बोला–"देखो भाई! अंट-संट बात न करो! भला मैं अपनी पत्नी को क्यों मार डालूंगा? सवेरा हो जाने दो, मैं नगर के अधिकारी से तुम पर शिकायत करूँगा।"

चेतसिंह ने चकित हो सारा वृत्तांत सुनाया।

वास्तव में बात यह थी कि वह लड़का बहुत साल बाद उस दंपति के घर पैदा हुआ था। उसका पिता नाई था। लड़का मंद बुद्धिवाला था, बाप ने उसे अपना पेशा सिखाना चाहा, मगर वह किसी काम का न रहा। आखिर लाचार हो उसे अपनी क़िस्मत पर छोड़ दिया।

उसका घर उजड़ता जा रहा था। अगले पर्व दिन तक चूना पोतना था। नये कपड़े खरीदने थे। इसके वास्ते नाई ने अपनी भैंस को हाट में बेचकर रुपये जोड़ने की योजना बनाई।

मगर दूसरे दिन वह बीमार पड़ा, इसलिए वह हाट में न जा पाया।

लड़के की माँ ने यह साबित करना चाहा कि उसका लड़का अयोग्य नहीं है। इस वास्ते उसे हाट में भेजकर उसके द्वारा भैंस को बिकवाना चाहा।

नाई ने धमकी दी–"अगर लड़का ठीक से भैंस को बेच न पाया तो मैं तुम दोनों की खबर लूंगा।" फिर अपने बेटे को

समझाया–"सुनो, तुम हाट में जाकर भैंस का भाव सवा सौ रुपये बता दो! आखिर सौ रुपये में बेच दो! सौ रुपये में कोई खरीदने के लिए तैयार न हुआ तो भैंस को मत बेचो। चुपचाप घर चले आओ।"

लड़का भैंस को हांककर हाट में पहुँचा। उसे कोई भी सौ रुपये में खरीदने को तैयार न हुआ। शाम तक हाट में रहकर लड़का घर चला आया।

लड़के की माँ ने पूछा–"बेटा, तुमने भैंस को कितने में बेचा?"

"नहीं बेचा माँ! उसे कोई भी सौ रुपये में खरीदने को तैयार नहीं हुआ।" लड़के ने कहा।

"तो भैंस कहाँ?" माँ ने पूछा।

"बापू ने बताया था कि भैंस न बिकी तो घर चले आओ, मगर यह नहीं बताया कि भैंस को वापस हांक लाओ।" लड़के ने जवाब दिया।

इस पर माँ छाती पीटते हुए बोली–"तुम्हारा बापू तुम्हें और मुझको भी मार डालेंगे। कहीं भाग जाओ।" लड़के ने कमरे के भीतर झाँककर देखा, उसका बापू हजामत करने के लिए अपने उस्तरे को सान धर रहा था। बस लड़का इसे देख डर के मारे घर से भाग निकला और शिवाले में छिप गया।

लड़के के बाप ने सिपाही को डाँटकर कहा–"तुमने बावरे की बातें सुनकर हमारी दीवार और किवाड़ को तोड़ डाला है। सवेरा होने दो, मैं तुम्हारी नौकरी छुड़वा दूँगा।"

"भाई, सुनो! तुम्हें पुण्य होगा! मेरा पेट मत काटो। इसका हर्जाना मैं तुम्हें दे देता हूँ।" यों समझाकर चेतसिंह उसी वक्त घर पहुँचा, अपनी पत्नी को चन्द्रहार बनवाने के वास्ते जो तीन सौ रुपये बचाये थे, लाकर दे दिया।

फिर क्या था, नाई ने उस धन से अपने घर की मरम्मत कराई, चूना पोता, नये कपड़ों के साथ एक और भैंस भी खरीद ली।

अनुचित सबक

एक गाँव में जयराम और गौरी नामक एक दंपति थे। उनके रामनिवास नामक एक पुत्र था। जयराम दिन भर मेहनत करके अच्छी फ़सल पैदा करता और अपने परिवार को आराम से रखता था।

एक दिन पड़ोसी सियाराम ने जयराम के घर पहुँचकर कहा—"जयराम! तुम दिन भर हड्डी तोड़ मेहनत करते हो! शिवाले में पंडितजी पुराण कथा सुना रहे हैं। चलो, समय भी कट जाएगा और मन को शांति भी मिलेगी।"

जयराम पुराणों की बात कुछ नहीं जानता था, मगर वह सियाराम की बात का इनकार न पाया, मवेशियों की जिम्मेदारी अपनी पत्नी पर छोड़ पुराण कथा सुनने चल पड़ा।

उस दिन पुराण कथा वाचक ने स्वर्ग की कथा सुनाई। दूसरे दिन जयराम दारू पीकर घर लौट आया। आज पहली बार जयराम को दारू पीकर घर लौटे देख गौरी चकित रह गई। इस पर गौरी ने अपने पति को खरी-खोटी सुनायी।

इस पर जयराम ने हँसकर कहा—"अरी पगली, पुराण कथा सुनने के पहले मैं भी तुम जैसे दारू पीना पाप समझता था, मगर पुराण में बताया गया कि देवता सब पीते हैं।" गौरी की समझ में न आया कि अपने पति को कैसे समझावें!

दूसरे दिन जियाराम अपने पुत्र राम निवास को पुराण कथा सुनने ले गया। उस दिन पुराण कथा में बताया गया कि इन्द्र ने सगर के घोड़े का अपहरण किया है।

दूसरे दिन गौरी ने अपने छुट्टे पैसे आले में देखा, तो गायब थे। गौरी ने शाम को अपने पति से पैसों का जिक्र किया तो उसने साफ़ कह दिया—"अरी,

दुर्गादत्त वर्मा

मैंने एक भी पैसा नहीं लिया, शायद तुमने और कहीं रख छोड़ा हो, ठीक से ढूंढ लो।"

उस दिन रात को रामनिवास खाने के वक़्त "कालीपट्टण" का वर्णन करने लगा, इस पर गौरी ने पूछा—"बेटा, तुम्हें पैसे कहाँ से आये? तुमने तो मुझ से मांगकर पैसे नहीं लिये थे?"

"आले में से मैंने पैसे उठा लिये माँ।" रामनिवास ने सच्ची बात बताई।

"बेटा, तुमने चोरी क्यों की? हमारे घर में तो आज तक ऐसी बात नहीं हुई थी?" गौरी ने दुख भरे स्वर में पूछा।

"माँ, क्या इंद्र ने चोरी नहीं की? मैंने की तो क्या वह बड़ा अपराध हो गया?" रामनिवास ने उल्टा सवाल किया।

इसके बाद दो दिन जियाराम और रामनिवास ने पुराण की कथा में न मालूम क्या सुना हो, जियाराम खेत के काम पर न गया और रामनिवास पढ़ने पाठशाला में नहीं गया। जियाराम दिन भर हरि का स्मरण करते बैठा रह गया।

जियाराम अगर खेत के काम पर न जाता तो गृहस्थी का चलाना कठिन था। इसलिए गौरी ने सोचा कि अपने पति को इसका अच्छा सबक़ सिखलाना है।

दूसरे दिन जियाराम रोज की भांति नहाकर इस बात का इंतज़ार करने लगा कि उसकी पत्नी खाने को बुलावेगी। मगर बड़ी देर तक उसे खाने के लिए बुलावा न आया। तब घर के अन्दर जाकर जियाराम ने देखा, गौरी फूलों की माला गूंथते बैठी हुई थी।

जियाराम ने गुस्से में आकर पूछा—"तुम्हें अब फूलों की माला की जल्दी क्या पड़ी है? तुमने रसोई नहीं बनाई?"

गौरी ने हँसकर कहा—"मैंने सुना है कि इंद्र की पत्नी शचीदेवी हमेशा फूलों की माला से अपने पति की पूजा करती है। पुराणों में कहीं इस बात का वर्णन नहीं है कि शचीदेवी ने रसोई बनाई हो!" ये बातें सुनने पर जियाराम और रामनिवास के सर पर से पुराण कथा का नशा उतर गया।

सास और बहू

कुमुदिनी नये नये अपने ससुराल में आई। उसका पति शचीन्द्र था। कुमुदिनी ने जो कुछ सुना और पढ़ा था, उसके आधार पर उसने यह निर्णय कर लिया था कि सास नई बहू पर अधिकार चलाती है और अत्याचार भी करती है! मगर ससुराल में पहुँचने पर उसे अपार आश्चर्य हुआ। कुमुदिनी की सास ने मुस्कुराते हुए उसका स्वागत किया, एक दो दिन बीत गये, फिर भी सास के व्यवहार में कोई परिवर्तन न आया। वह अपनी बहू को अपनी बेटी से ज़्यादा मानने लगी थी। फिर भी कुमुदिनी की शंका बनी रही, उसने सोचा कि कुछ औरतें प्रारंभ में बड़े प्रेम और आदार का व्यवहार करेंगी, धीरे-धीरे खुल जायेंगी!

शचीन्द्र सवेरे सवेरे बासी भात खाकर खेत पर चला जाता और संध्या को घर लौटता था, वह अपनी पत्नी के साथ जैसे प्यार करता था, वैसे अपनी माँ के प्रति भक्ति भी रखता था। जब से उसकी बहू घर आई है, तब से उसके सारे काम वही देखती रही, इस पर शचीन्द्र ने सोचा कि बहू के आने से उसकी माँ के काम का बोझ थोड़ा उतर गया है।

एक दिन रात को उसने अपनी पत्नी को रुलाने के ख़्याल से खाना खाते वक़्त मजाक़ किया—"आज तुम्हें क्या हो गया है? रसोई ऐसी खराब क्यों है?"

कुमुदिनी ने सोचा कि उसका पति रोज रसोई की तारीफ़ करता था, आज उनके मुँह से ये बातें सुनकर वह बोली—"आज तुम्हें क्या हो गया है? रोज तुम्हारी माँ ही तो रसोई बनाती है।" यह जवाब सुनने पर शचीन्द्र का दिल कचोट उठा। उसने पूछा—"तुम उनकी मदद क्यों नहीं करती?"

सावित्री कक्कड़

"तो तुम्हारा उद्देश्य है कि मैं रोज खा-पीकर सिर्फ़ आराम करती हूँ? हमारे मायके में तो मुझे आराम ही आराम है!" कुमुदिनी ने रोष में आकर जवाब दिया।

इस पर शचीन्द्र गुस्से में आया और बोला–"तब तो तुम अपने मायके में ही क्यों नहीं रहती? यहाँ किसलिए आई?"

कुमुदिनी को रोना आया। अपने पति के मुँह से ये शब्द सुनने के बाद उसे ससुराल में रहने का मन न हुआ। वह अपने मायके चल पड़ी, सास ने सोचा कि बहू को शायद मायके की हवा लग गई है, उसने उसे विदा किया।

कुमुदिनी ने मायके पहुँचते ही अपनी माँ के साथ आलिंगन करके रोते हुए कहा–"माँ, मैं अब ससुराल में नहीं जाऊँगी। वहाँ पर मेरी इज्जत नहीं होती!"

"रोओ मत बेटी! यहीं रह जाओ! दामाद को अपनी भूल आज नहीं तो कल ज़रूर मालूम हो जाएगी। वह पछताकर तुम्हें ले जाएगा।" माँ ने समझाया।

कुमुदिनी के महेन्द्र नामक एक भाई था। उसकी पत्नी विनोदिनी नई बहू बनकर ससुराल में आ गई थी।

घर का सारा काम विनोदिनी के करते देख कुमुदिनी को दुख हुआ। उसने माँ से पूछा–"माँ! रसोइन कहाँ पर है?"

"बेटी, बहू जब आ गई तो रसोइन की क्या ज़रूरत है?" माँ ने समझाया।

इसके बाद कुमुदिनी ने देखा कि उसकी माँ सवेरे सवेरे विनोदिनी को जगा देती है और संध्या तक उससे कसकर ऐसे काम लेती है जिससे विनोदिनी को दम लेने की फ़ुरसत तक नहीं मिलती। अपने ही समान ससुराल में आई युवती को भैंसे की तरह मेहनत करते देख कुमुदिनी का दिल बैठ गया।

उसने अपनी माँ को बुरा-भला सुनाया और उसे धमकी दी कि अगर अपनी भाभी के साथ माँ अच्छा व्यवहार न करेंगी तो वह कभी मायके न आवेगी, इसके बाद वह अपने ससुराल चली गई।

द्वापर युग में श्रीकृष्ण ने यदु वंश में जन्म धारण करके कंस आदि दुष्टों का संहार किया और द्वारका नगर में अपनी आठ पत्नियों के साथ सुखपूर्वक अपना समय बिताने लगे। उनके बड़े भाई बलराम यादवों का नेता बनकर शासन करने लगे। कृष्ण के वाहन के रूप में गरुड़ द्वारका में ही निवास करने लगा।

इसके बाद श्रीकृष्ण ने सत्यभामा के साथ जाकर नरकासुर का संहार किया। सत्यभामा ने भी युद्ध में श्रीकृष्ण की सहायता की। तब से सत्यभामा के मन में इस बात का अहंकार पैदा हुआ कि श्रीकृष्ण की आठ पत्नियों में वही सर्व श्रेष्ठ है। एक दिन नारद मुनि ने देवलोक से पारिजात पुष्प लाकर रुक्मिणी के हाथ दिया। सत्यभामा यह सोचकर रूठ गई कि श्रीकृष्ण की असली पत्नी के मेरे रहते यह पुष्प मेरी सौत रुक्मिणी के हाथ कैसे दिया गया?

इस पर श्रीकृष्ण अपने साथ सत्यभामा को गरुड़ वाहन पर बिठाकर देवलोक में गये, पारिजात वृक्ष को उखाड़कर ले जाने लगे, तब इन्द्र ने श्रीकृष्ण के वाहन गरुड़ पर अपने वज्रायुध का प्रहार किया। गरुड़ ने उस आयुध को अपने पंख से रोका और उसे दूर फेंक दिया। इस पर गरुड़ भी अपनी शक्ति पर अभिमान करने लगा। सत्यभामा पारिजात वृक्ष को

अपने महल के बगीचे में रोपवाकर अभिमान से भर उठीं।

बलराम भी कई शक्तिशाली दुष्टों तथा नरकासुर के इष्ट मित्र द्विद नामक महान पूंछ विहीन नर वानर का अपने हल से संहार करके अपनी शक्ति एवं वीरता पर अभिमान करने लगे।

सत्यभामा, गरुड़ और बलराम इन तीनों का अहंकार दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा था, इसे देख श्रीकृष्ण मुस्कुराते समय की प्रतीक्षा करने लगे।

एक दिन गरुड़ एक नाग बालक को पकड़ने गया, तब उसकी माँ कांचनहेला नामक एक नागिन दौड़कर आ पहुँची और उस बालक को उठाकर भाग गई। गरुड़ ने उसका पीछा किया। इस पर नागिन भय के मारे "बचाइये! बचाइये!" चिल्लाते हांफते भागी जा रही थी, उसी वक़्त नारद महर्षि सामने आये, उसे समझाया—"तुम राम नाम का स्मरण करते हनुमान की शरण में जाओ। वे ही तुम लोगों की रक्षा कर सकते हैं। हनुमान इस वक़्त गंध मादन पर्वत पर तपस्या कर रहे हैं। शीघ्र जाओ।"

कांचनहेला हनुमान के पास पहुँची, उनके चरणों पर अपने पुत्र को डाल यह कहते गिर पड़ी—"हमें बचाइये! हमें बचाइये, राम! राम!"

हनुमान ने आँखें खोलकर अभय प्रदान किया—"मेरे आश्रम में तुम लोग निर्भय रहो।" इस बीच गरुड़ उनका आहार बनाने आ पहुँचा। हनुमान ने कहा—"हे पक्षीराज, यदि आप भूखे हैं तो मेरे शरीर को नोच-नोचकर खाइये।"

"सर्प ही मेरा आहार है। तुम बंदर हो, मेरे खाने योग्य नहीं हो।" यों कहते गरुड़ हुंकार करके आश्रम में स्थित नागों को पकड़ने झपटा, तब हनुमान ने अपनी पूंछ से गरुड़ के पंखों को मरोड़कर बांध दिया और आसमान में घुमाकर दूर फेंक दिया। फिर क्या था, गरुड़ उस वेग में द्वारका

नगर में स्थित बलराम के सामने चोट खाये पक्षी की भांति जा गिरा।

कांचनहेला हनुमान को प्रणाम करके अपने पुत्र के साथ पाताल लोक में स्थित अपने भाई वासुकी के पास सुरक्षित पहुँच गई। उधर गरुड़ को अपमानित हुए देख बलराम बोले–"गरुड़, तुम चिंता न करो। मैं उस बंदर का काम देख लूंगा। तुम जाकर उस वानर से कह दो कि बलराम देव अपनी सेवा में पहुँचने को तुम्हें आदेश दे रहे हैं।"

गरुड़ डरते-डरते दूत जैसे हनुमान के पास पहुँचा और हनुमान को यह समाचार सुनाया। मगर हनुमान ने इसकी कोई परवाह नहीं की। इस पर उसने जोर से पंख फड़फड़ाकर होहल्ला मचाते हुए यह समाचार सुनाया। वह हनुमान के निकट जाकर उन पर अपनी चोंच चलाने को हुआ, मगर फिर अपनी जीभ काटकर वापस चला गया। उस वक़्त द्वारका में बलराम से राजकीय मंत्रणा करने आये हुए कृष्ण ने गरुड़ के मुँह से सारा समाचार सुना, तब बोले–"तुम अभी जाकर हनुमान से कह दो कि राम बुला रहे हैं।"

इस पर हनुमान गरुड़ के साथ द्वारका में आये और उच्च स्वर में पुकारने लगे–"हे राम! मेरे राम! राम! राम!"

तब बलराम गर्व के साथ उठकर हनुमान के निकट गये और बोले–"रामचन्द्र नहीं हूँ मैं, मैं बलराम हूँ। तुम अगर तीन बार 'बलराम देवायनमः' उच्चार करोगे तो मैं तुम्हें क्षमा कर दूंगा।"

हनुमान क्रोध में आये, दांत पीसकर बोले–"क्या कहा? आप बलराम हैं? या अबलराम हैं?"

तब कुपित हो बलराम ने हनुमान पर अपना हलायुध उठाया। हनुमान ने उसे अपनी पूँछ में लपेटकर दूर फेंक दिया। फिर जब बलराम हनुमान पर प्रहार करने को हुए तब उन्होंने बलराम को जोर से अपने दोनों हाथों से ऊपर उठाया।

बलराम छटपटाते बेहोश हो गये। उस बेहोशी की हालत में सपने की भांति उन्हें कोई समाचार स्मरण में आया।

रामचन्द्रजी के राज्याभिषेक के समय लक्ष्मण ऊँघते हुए खिलखिलाकर हँस पड़े थे। उस सभा में उपस्थित सब लोग यह सोचकर नतमस्तक हुए कि लक्ष्मण उन्हीं का परिहास कर रहे हैं, इस पर कुपित हो रामचन्द्रजी ने लक्ष्मण पर तलवार उठाई। हनुमान ने रामचन्द्रजी को रोका। लक्ष्मण से परिहास का कारण जानकर सभासदों से यों निवेदन किया—"वनवास के समय दिन-रात सीता-राम की रक्षा के हेतु पहरा देने के वास्ते निद्रा हार तजकर निद्रा से निवेदन किया था कि चौदह साल तक वह जागे रहे। निद्रा देवी ने लक्ष्मण पर दया करके ऊर्मिला में प्रवेश किया। चौदह साल निद्राहार तजनेवाले के हाथ में इंद्रजित की मृत्यु लिखी गई थी। अब चौदह साल पूरे हो गये थे, इस कारण निद्रा ने उनके भीतर प्रवेश किया था। इसकी याद आते ही लक्ष्मण हँस पड़े।

हनुमान के मुँह से यह वृत्तांत सुनकर रामचन्द्रजी ने पूछा—"मैंने वनवास के समय लक्ष्मण को खाने के लिए एक केला दिया था, उसका क्या हुआ?"

इस पर लक्ष्मण ने झट से चाकू से अपनी जांघ चीर डाली; उसमें से केला निकालकर बोले—"भाई ने प्रेम से मुझे जो फल दिया था उसे रामप्रसाद के रूप में छिपाकर रखा था। अब मैं वह फल खाकर अपना उपवास तोड़ रहा हूँ।" यों कहते लक्ष्मण वह केला निगल डाले।

रामचन्द्रजी ने लक्ष्मण के साथ गाढ़ालिंगन करके उच्च स्वर में कहा—"भैया! अगले जन्म में मैं तुम्हारा छोटा भाई बनकर तुम्हारा ऋण चुकाऊँगा।"

बलराम को जब अपने पूर्व जन्म का वृत्तांत स्मरण में आया कि उस जन्म में वे लक्ष्मण थे। तब होश में आकर हनुमान से बोले—"हे संजीवराय! तुमने उस वक्त

संजीविनी लाकर मुझे होश में ला करके बचाया है। इस वक़्त बेहोशी में मुझे ज्ञानोदय कराया है। चलो, तुम अपने राम को देख लो।" यों समझाकर हनुमान को बलराम कृष्ण के पास लिवा ले गये।

श्रीकृष्ण हनुमान को देखते हुए मुट्ठी कसकर मुष्टि युद्ध के लिए उसे ललकारते हुए बोले–"मेरे बड़े भाई बलराम का तुम धिक्कार करते हो! लो, अपने को बचा लो!"

इसके बाद श्रीकृष्ण और हनुमान के बीच बड़ी देरी तक युद्ध हुआ। बड़ी निपुणता के साथ युद्ध करनेवाले कृष्ण की मन ही मन प्रशंसा करते हनुमान ने अपनी सारी शक्ति लगाकर कृष्ण पर प्रहार किया और उन्हें गिराया। कृष्ण ने थकावट का अनुभव करते विजयहास करते भूले-बिसरे हनुमान पर उछलकर उनके वक्ष पर अपनी मुष्ठि का आघात किया। तब श्रीकृष्ण का चरण हनुमान को जा लगा।

श्रीकृष्ण के चरण-स्पर्श से हनुमान को भान हो गया कि श्रीरामचन्द्रजी ही श्रीकृष्ण के रूप में अवतरित हुए हैं। इसके पूर्व लंका में अग्निप्रवेश के पूर्व रामचन्द्रजी ने जो कठोर शब्द कहे थे, उन्हें सुन सीताजी रो पड़ी थीं, तब हनुमान

श्रीरामचन्द्रजी पर नाराज हो मुट्ठी बांध कर बोले थे–"श्रीरामचन्द्रजी! आप मेरे साथ युद्ध कीजिए।"

रामचन्द्रजी ने मंदहास करके कहा था– "हनुमान! मैं इस वक़्त तुम्हारे साथ युद्ध करने में अशक्त हूँ। भविष्य में मैं कभी तुम्हारी इच्छा की पूर्ति करूँगा।"

यह घटना हनुमान के स्मरण में आ गई। इस पर वे प्रसन्न हो बोले–"हे राम! आप श्रीरामचन्द्रजी के रूप में ही मुझे दर्शन देकर मुझ पर अनुग्रह कीजिए।"

"हनुमान! तुम थोड़ी देर के लिए सहन कर लो। लक्ष्मण तो यहीं पर हैं, पर सीताजी को भी प्रवेश करने दो न।"

यों कह कर सीताजी के रूप में प्रवेश करने के लिए सत्यभामा के पास खबर भेज दी।

सत्यभामा यह सोचकर अभिमान करती रही कि अनेक जन्मों से वह श्रीकृष्ण की ही पत्नी रही है, इस विचार से सात हफ़्तों के आभूषण धारण कर पारिजात पुष्पों को जूड़े अलंकृत करके ठाठ से आकर श्रीकृष्ण के निकट खड़ी हुई।

पर हनुमान ने सत्यभामा को देखते ही कहा—"ओह, आप तो चन्द्रसेना हैं। तब, तो राम ने जो वचन दिया था कि कृष्णावतार में अपनी अष्ट महिषियों में से आप को भी एक पत्नी के रूप में स्वीकार करनेवाले हैं, उस का पालन किया है। आप धन्य हैं!"

ये बातें सुनने पर सत्यभामा को अपने पूर्व जन्म की स्मृति ताजा हो उठी। वह अपने अहंकार को त्याग रुक्मिणी के पास जाकर बोली—"दीदी! सीताजी आप हैं, आप ही हनुमान पर अनुग्रह कीजिए।"

इसके बाद रुक्मिणी सीताजी के रूप में आई। श्रीकृष्ण ने कोदण्ड राम के रूप में अपने दायें हाथ से हनुमान को आशीर्वाद दिया। बलराम लक्ष्मण बनकर विनयपूर्वक खड़े हो गये; हनुमान रामचन्द्रजी के चरण की ओर एकाग्र दृष्टि प्रसारित कर हाथ जोड़कर अनिर्वचनीय आनंद में डूब गये। सीताजी ने हनुमान को आशीर्वाद दिया—"चिरंजीवी बने रहो!"

इसके बाद अपने रामावतार का उपसंहार करके श्रीकृष्ण ने हनुमान के कंधे पर अपने हाथ से थपथपाकर कहा—"हनुमान, तुम हिमालयों की घाटियों में स्थित कदली वन में रहो। वहाँ पर तुम्हारे छोटे भाई वायुपुत्र भीम आ जायेंगे। उन्हें गदा युद्ध और मल्ल युद्ध के रहस्य बताकर प्रवीण बना दो।"

इस पर सत्यभामा हनुमान के सामने प्रवेश करके बोली—"पूर्व जन्म में आप रामचन्द्रजी को मेरे पास ले आये और मुझे इस रूप को प्राप्त होने का सौभाग्य प्रदान किया।
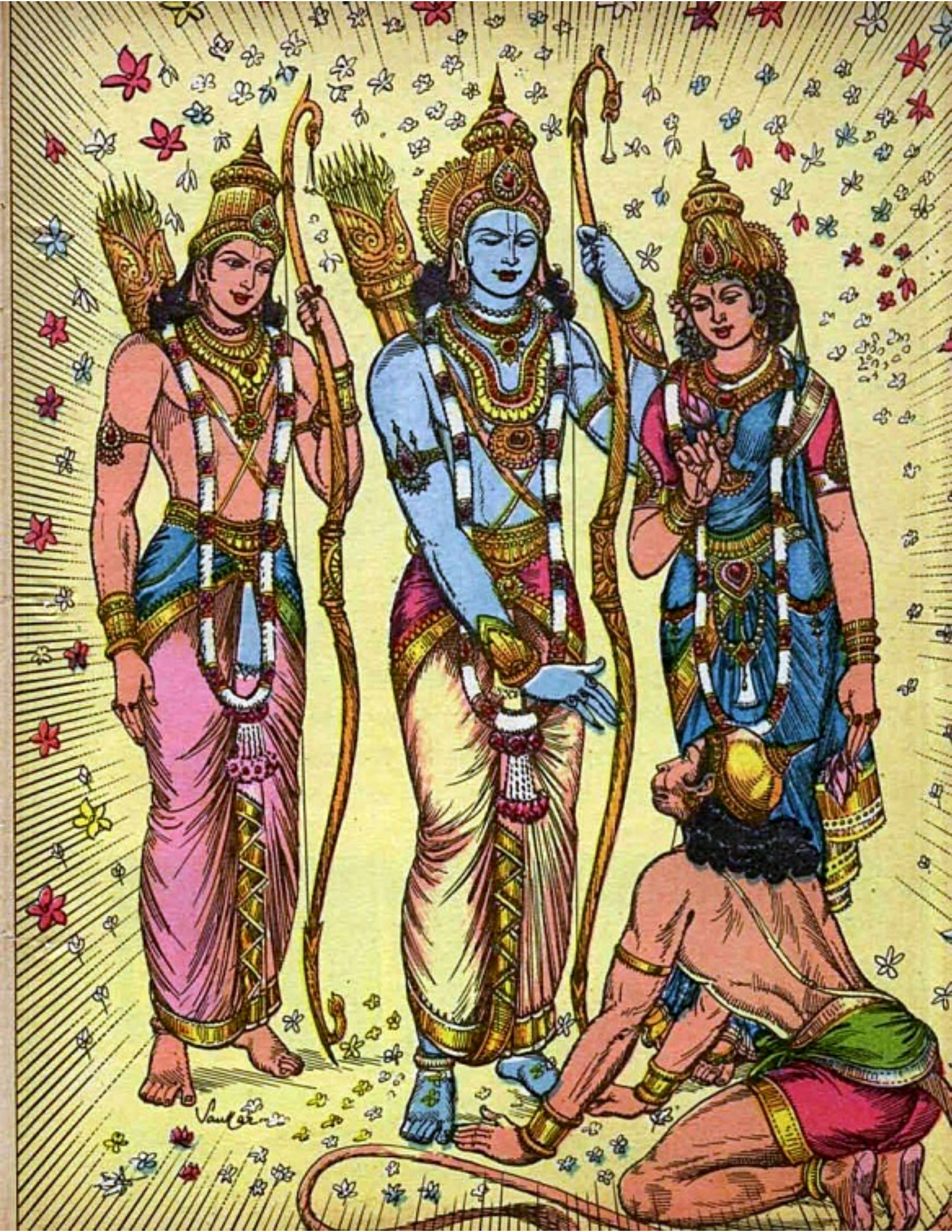
इसके वास्ते में आप के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।"

हनुमान ने सत्यभामा को प्रणाम करके कहा–"माताजी, आप सत्यभामा हैं। भगवान सदा सत्य के वशीभूत रहते हैं, इस अर्थ को ध्वनित करने के लिए श्रीकृष्ण ने आप को वरण किया। आप के साथ प्रणय करके आप की हर कामना की पूर्ति करके सत्यापति नामक उपाधि प्राप्त की। आप धन्य हैं। आप मेरे लिए सीताजी के समान हैं।"

हनुमान की बातें सुन सत्यभामा आनंद के मारे पुलकित हो उठी, श्रीकृष्ण के चरणों से लिपट कर बोली–"इतने समय बाद हनुमान के वचनों के द्वारा मैं सत्य को समझ पाई। आज से मैं अपने अहंकार को त्याग रही हूँ।"

इसके उपरांत हनुमान रुक्मिणी तथा श्रीकृष्ण को प्रणाम करके चलने को हुए, तब बलराम ने हनुमान के साथ आलिंगन करके कहा–"संजीवराय! आपके कारण मैं अपने आप को समझ पाया। मैंने भी अपना अहंकार त्याग दिया है। आप को धन्यवाद समर्पित करता हूँ।"

अब गरुड़ हनुमान को प्रणाम करके बोला–"वीर हनुमान! मुझे अब यह बात याद हो आई कि श्री महाविष्णु ने एक बार मुझसे बताया था कि क्षीरसागर में मेरे साथ आप भी रहने जा रहे हैं।" यों कहकर गरुड़ हनुमान के साथ कदली वन तक साथ साथ चला।

कदली वन ऊँचे केले के पौधों से भरे अह्लाद देने जैसा है। हिमालयों के शिखरों से बहनेवाले झरने अत्यंत मनमोहक हैं।

हनुमान ने कदली वन में प्रवेश किया, तब वे अति वृद्ध बंदर के रूप में एक ऊँचे केले के तने से सटकर अपने पैर फैला कर बैठ गये। उनकी पूंछ सीध में रास्ते को रोके फैली थी। उनके हाथ के निकट गदा पड़ा हुआ था।

हनुमान आँखें बंद करके रामचन्द्रजी का ध्यान करते राम नाम जापने लगे।

दधीचि का त्याग

विश्वकर्म के पुत्र का इंद्र ने वध किया। इसकी प्रतिक्रिया के रूप में विश्वकर्म ने यज्ञ किया। इस पर यज्ञ कुंड से वृत्तासुर नामक एक भयंकर राक्षस पैदा हुआ।

वृत्तासुर ने विश्वकर्म को वचन दिया कि उसकी इच्छा की पूर्ति करेगा। उसने ब्रह्मा के प्रति सौ वर्ष तप किया।

इंद्र आदि देवताओं ने सोचा कि वृत्तासुर अगर ब्रह्मा से वरदान प्राप्त करे तो उसका वध करना असंभव है, इसलिए उसके यज्ञ का भंग करना चाहा।

इसलिए वृत्तासुर का ध्यान भंग करने के हेतु देवताओं ने अप्सराओं को उसके पास भेजा। अप्सराओं ने नाचा, गाया, पर कोई फ़ायदा न रहा। वृत्तासुर ने उनकी तरफ़ आँख उठाकर तक न देखा।

अंत में ब्रह्मा ने प्रत्यक्ष होकर वृत्तासुर से वर माँगने को कहा। उसने वर माँगा कि दिन या रात अथवा लकड़ी या लोहे और अग्नि के द्वारा भी उसकी मृत्यु न हो!

इसके बाद वृत्तासुर अपने राक्षस बल के साथ देवताओं पर हमला करके उन्हें सताने लगा।

देवता वृत्तासुर का अहित न कर पाये। वे लोग उससे डरकर भाग गये। अकेले ही वृत्तासुर के साथ युद्ध करनेवाले इंद्र को पकड़कर उसने निगल डाला।

देवता हारकर अपने गुरु बृहस्पति के पास गये और अपना बुरा हाल सुनाया। बृहस्पति ने जंभाई की सृष्टि की।

जंभाई ने जाकर वृत्तासुर में प्रवेश किया। उसने ज्यों ही जंभाई ली, इंद्र उसके मुंह से बाहर निकल आये।

वृत्तासुर किसी आयुध या आग के द्वारा मृत्यु को प्राप्त नहीं हो सकता था। वह किसी महर्षि की हड्डी की मदद से ही मर सकता था। इंद्र ने दधीचि महर्षि के पास जाकर यह वृत्तांत सुनाया।

दधीचि वैसे इंद्र से संतुष्ट नहीं थे। पर वृत्तासुर जगत के लिए हानिकारक था। इसलिए उन्होंने समाधिस्थ होकर अपनी देह को त्याग दिया। यही दधीचि का त्याग है।

इसके बाद दधीचि की हड्डी को वज्रायुध के रूप में तैयार करके संध्या के समय जो रात या दिन न था, इंद्र ने वृत्तासुर का वध किया।

कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता

कहानी का सुंदर शीर्षक देकर रु. २५ जीतिए!

?

एक वैष्णव आचार्य दूर की यात्रा करते अंधेरा होने के कारण एक गाँव में पहुँचा।

रास्ते में एक व्यक्ति ने उसे बताया कि उस गाँव में सभी वैष्णव ही निवास करते हैं। इसलिए वैष्णवाचार्य उस गाँव के एक मकान के सामने खड़े हो बोला–"महाशय! मैं एक वैष्णव हूँ। यदि आप भी वैष्णव हैं तो मुझे आज रात को अपने घर आश्रय दीजिए।"

इस पर घर का मालिक बोला–"क्षमा कीजिएगा, मैं वैष्णव नहीं हूँ। मुझ जैसे नीच के घर में आश्रय पाकर आप अपवित्र न होइएगा।"

इसके बाद वैष्णवाचार्य ने दूसरे घर पहुँचकर ये ही शब्द कहे। उस घर के मालिक ने भी अपने को वैष्णव स्वीकार नहीं किया। वह अनेक घर पहुँचा, मगर उसे यही जवाब मिला कि कोई भी घर वैष्णवों का नहीं है।

आख़िर वैष्णवाचार्य ने रास्ता चलनेवाले एक व्यक्ति को रोककर पूछा–"महाशय, मैंने सुना है कि इस गाँव में सभी वैष्णव ही निवास करते हैं, लेकिन कोई भी अपने को वैष्णव मानने को तैयार नहीं हैं, बात क्या है?"

"महाशय! इस गाँव के सभी लोग वैष्णव हैं। मगर विष्णु भक्तों के लिए अहंकार त्याज्य है। इसलिए आप अपने को वैष्णव बतायेंगे तो कोई भी आप को आतिथ्य न देगा। दूसरे ढंग से पूछकर देखियेगा, शायद काम चल जाय।" यात्री ने कहा।

इसके बाद वैष्णवाचार्य ने एक मकान के निकट पहुँचकर पूछा–"महाशय! मैं एक परम नीच व्यक्ति हूँ। क्या मुझे आप के घर आश्रय मिल सकता है?"

"भीतर पधारियेगा।" एक गृहस्थ ने जवाब दिया।

★ ★ ★

उपर्युक्त कहानी के लिए बढ़िया शीर्षक कार्ड पर लिखकर, निम्न लिखित पते पर भेजें–"कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता", चन्दामामा २ & ३, आर्काट रोड, मद्रास-६०० ०२६

कार्ड हमें अगस्त १० तक प्राप्त हों और उसमें फोटो-परिचयोक्तियाँ न हों। इसके परिणाम चन्दामामा के अक्तूबर '७८ के अंक में घोषित किये जायेंगे।

जून मास की प्रतियोगिता का परिणाम: "मन का बिम्ब"

पुरस्कृत व्यक्ति: **अमिता धींगड़ा**, धींगडा निवास, वीर नगर, सहारनपुर (उ. प्र.)

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अक्तूबर १९७८ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

C. K. Sathyaraj

★

A. L. Syed

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ अगस्त १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए; उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

जून के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : सिलाई की कमाई !

द्वितीय फोटो : रसोई में काम आई !!

प्रेषक : संजीवकांत चतुर्वेदी, "आतिश भवन", गढ़, कोटा (राजस्थान)

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 - (India). Controlling Editor : NAGI REDDI.

अमर चित्र कथा

इतिहास व पुराणों पर आधारित रंगीन चित्र कथाएँ बच्चों का मनोरंजन ही नहीं, चरित्र निर्माण भी करती हैं।

अब तक प्रकाशित हुई कुछ चित्र कथाएँ:

कृष्ण लीला	नल दमयन्ती
राम की कहानी	हरिश्चन्द्र
लव-कुश	महाभारत
पंचतंत्र	चाणक्य
जातक कथाएँ	छत्रपति शिवाजी
गीता	राणा प्रताप
हनुमान	पृथ्वीराज चौहान
शिव-पार्वती	कर्ण

१६० से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित।

सभी पुस्तक विक्रेताओं से उपलब्ध।

मूल्य प्रति पुस्तक रु. २.५०

वितरक

इंडिया बुक हाऊस

कलकत्ता-१६, पटना-४

नई दिल्ली-१

सेन्ट्रल बुक डिस्ट्रिब्युटर्स, लखनऊ-१
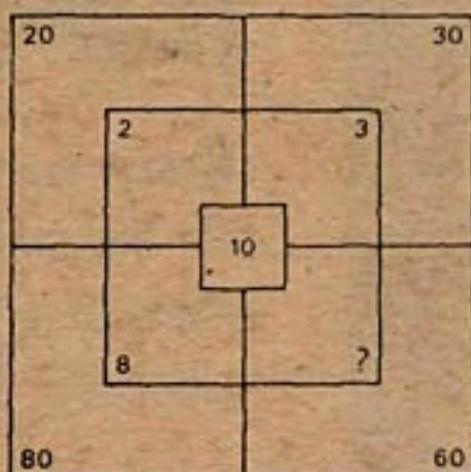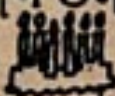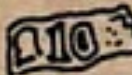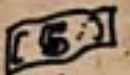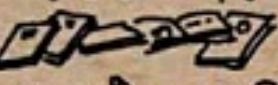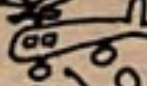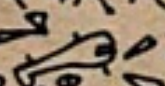
जुड़वाँ भाई-बहन ने अपने जन्मदिन पर सबको दावत दी. उनकी माँ ने उनके लिए एक बड़ा सा केक बनाया और उसमें ६ मोमबत्तियाँ लगाईं. दावत में उनके सभी साथी आये. पापा ने हरेक को १० रुपये और मम्मी ने ५ रुपये दिये. उनको बहुत सारे उपहार और रुपये व मिठाइयाँ मिलीं. अशोक ने उन रुपयों से ढेर सारी किताबें और एक खिलौना खरीदा. लेकिन आशा ने कहा कि वह अपने रुपये जमा करेगी. अशोक ने उसका मज़ाक उड़ाया. आशा अपने पापा के साथ स्टेट बैंक गई. उसने अपने रुपयों से अपना खाता खोला और उसको अपने नाम से एक पासबुक मिली. वह अपने जेब-खर्च के पैसे जमा करती रही. धीरे-धीरे उसके रुपये बढ़ते ही गये. अब अशोक ने उसका मज़ाक उड़ाना बन्द कर दिया. उसकी किताबें फट गईं, खिलौना टूट गया और मिठाइयाँ खत्म हो गयीं... अब उसके पास कुछ भी न बचा. अगली बार जेब-खर्च मिलने पर वह आशा के साथ स्टेट बैंक गया. अपनी पासबुक पाकर उसे बड़ी खुशी हुई. उसने कहा—"अब मैं अपने सारे पैसे खर्च नहीं करूँगा... मैं भी बचत करूँगा."

बच्चों, अशोक की तरह तुम भी अपने सारे पैसे खर्च मत किया करो. आशा की तरह बचत करो. अपने पापा या मम्मी से कहकर स्टेट बैंक में अपना खाता खुलवाओ और अपने पैसे बढ़ाओ.

स्टेट बैंक

रसीली प्यारी मज़ेदार

पारले
पॉपिन्स

फलों के स्वादवाली गोलियां

PARLE POPPINS

५ फलों के स्वाद — रासबरी, अननास, नींबू, संतरा और मोसंबी.

everest/78/PP/184-hn